

॥ श्रीश्रीगौरहरिर्जयति ॥

प्रकाशितग्रन्थसंख्या - १४४

साधककण्ठभूषण

प्रथमभाग

[वैष्णववन्दना व परिचय]



प्रकाशक :—

बाबाकृष्णदास

// कुसुमसरोवरवाले //

संवत् २०२५

न्योछावर - ५० प.व.

❀ साधक-कण्ठभूषण ❀



बन्देऽहं श्रीगुरोः श्रीयुतपदकमलं श्रीगुरुन् वैष्णवांश्च
श्रीरूपं साग्रजातं सहगणरघुनाथान्वितं तं सजीवम् ।
साद्वैतं साबधूतं परिजनसहितं कृष्णचैतन्यदेवं
श्रीराधाकृष्णपादान् सहगणललितान् श्रीविशाखान्वितांश्च ॥



श्रीश्रीगुरुवन्दना—

आश्रय करिया बन्दों श्रीगुरुचरण ।
याहा हृदये मिले भाइ कृष्णप्रेमधन ॥ध्रु॥
जीवेर निस्तार लागि नन्दसुत हरि ।
भुवने प्रकाश हन गुरु-रूप धरि ॥
महिमाय गुरु कृष्ण एक करि जान ।
गुरु-आज्ञा हृदे सब सत्य करि मान ॥
सत्य-ज्ञाने गुरु-बाक्ये याहार विश्वास ।
अबश्य ताहार हय ब्रजभूमे वास ॥
यार प्रति गुरुदेव हन परसन्न ।
कोन बिघने सेह नाहि हय अबसन्न ॥
कृष्ण रुष्ट ह'ले गुरु राखिवारे पारे ।
गुरु रुष्ट ह'ले कृष्ण राखिवारे नारे ॥
गुरु माता गुरु पिता गुरु हन पति ।
गुरु विना ए-संसारे नाहि आर गति ॥
गुरुके मनुष्य-ज्ञान ना कर कखन ।
गुरु—निन्दा कभु कर्णे ना कर श्रवण ॥
गुरु—निन्दुकेर मुख कभु ना हेरिबे ।
यथा हय गुरु—निन्दा तथा ना याइबे ॥

गुरु विक्रिया यदि देखह कखन ।
 तथापि अबज्ञा नाहि कर कदाचन ॥
 गुरु-पादपद्मे रहे यार निष्ठाभक्ति ।
 जगत तारिते सेइ धरे महाशक्ति ॥
 हेन गुरु-पादपद्म करह बन्दना ।
 याहा हैते घुचे भाइ सकल यन्त्रणा ॥
 गुरु-पादपद्म नित्य ये करे बन्दन ।
 शिरे धरि बान्द आमि ताँहार चरण ॥
 श्रीगुरु-चरणपद्म हृदे करि आश ।
 श्रीगुरु बन्दना करे सनातत दास ॥
 इति श्रीलसनातनदासकृत "श्रीश्रीगुरुबन्दना" समाप्त

सपार्षद-श्रीगौराङ्ग-बन्दना—

श्रीगुरु-चरण बन्दों गौराङ्ग निताइ ।
 चरणे शरण देह अद्वैत गौसाजि ॥
 गदाधर श्रीनिवास स्वरूप नरहरि ।
 पिपाओ गोरा-प्रेमामृत मोरे कृपा करि ॥
 दयार समुद्र गौर-प्रिय हरिदास ।
 मोर पाप-चित्तो कर नामेर प्रकाश ॥
 शची जगन्नाथ पद्मा हाड़ाइ पण्डित ।
 अबोध-बालके दया एइ से उचित ॥
 अनुग्रह करह कुवेर नाभादेवि ।
 तुया पुत्र अद्वैत-चरण येन सेवि ॥
 लक्ष्मी बिष्णुप्रिया देवि ! निजगण सने ।
 कृपा कर नदीया—विहार रहु मने ॥

बसुधा जाहवादेवि ! दया कर मोरे ।
 तोमार निताइएर लीला स्फुरक आमारे ॥
 दीने दया कर ओहे माधव-रत्नावती ।
 तुया पुत्र गदाधर-पदे रहु मति ॥
 माधवी मालिनी दमयन्ती देवी साता ।
 तोमार बिना गौराङ्गेर के आछे रक्षिता ॥
 बासुदेव सार्वभौम भट्टाचार्य ओहे ।
 तोमार गौराङ्ग-गुणे मत्त कर मोहे ॥
 दास गदाधर मोरे राखह चरणे ।
 ना भुलिये श्रीगौराङ्ग जीवने मरणे ॥
 गोविन्द गरुड कविचन्द्र काशीश्वर ।
 मो अधमे कर निज—दासेर किङ्कर ॥
 विश्वरूप श्रीयुत श्रीवीरचन्द्र प्रभु ।
 देह पद—सेवा येन ना भुलिये कभु ॥
 गौरीदास आचार्य नन्दन बनमाली ।
 ए-दुःखीरे कर निज नाछेर काङ्गाली ॥
 विद्यानिधि हलायुध श्रीरघुनन्दन ।
 बारिक करह धनी दिया प्रेम—धन ॥
 मुरारि गोविन्द ओहे मुकुन्द बासुघोष ।
 चरणे धरिया बलि क्षम मोर दोष ॥
 अनन्त ईश्वर ओहे माधवेन्द्र पुरी ।
 राधाकृष्णप्रेमे मत्ता कर कृपा करि ॥
 केशव भारती कृपा कर एइबार ।
 विश्वम्भरेर लीला येन ना छाड़िये आर ॥
 बासुदेव दत्ता उद्धारण पुरन्दर ।
 त्राण कर फुकारये ए दीन पामर ॥

दामोदर श्रीकर बल्लभ सनातन ।
 निज-गुणे देह शुद्ध भक्ति-लक्षण ॥
 ओहे गौर-प्रिय श्रीआचार्य सिंहेश्वर ।
 घुचाओ कुबुद्धि होक् विशुद्ध अन्तर ॥
 ओहे गोपीनाथ पट्टनायक एइबार ।
 कृपा कर मो सम अधम नाहि आर ॥
 भागवत माधव आचार्य दयामय ।
 एइ कर प्रभुर चरित्रे मन रय ॥
 गौरप्रिय—प्राण ओहे रूप सनातन ।
 देह शक्ति करि प्रभुर चरित्र वर्णन ॥
 श्रीजीव गोपाल—भट्ट दास—रघुनाथ ।
 दन्ते तृण धरि कहि कर आत्मसात् ॥
 चिरञ्जीव सुवृद्ध-मिश्र राघव कंसारि ।
 कर ये उचित किछु बलिते ना पारि ॥
 ओहे गौर—प्रिय शुन श्रीधर-ठाकुर ।
 लाज त्यजि बलिये दुर्गति कर दूर ॥
 श्रीवंशीबदन बक्रेश्वर शिवानन्द ।
 दुःख घुचाइया देह बारिक आनन्द ॥
 श्रीमधु—पण्डित काशीमिश्र गङ्गादास ।
 ओ पद भरसा मोर ना कर नैराश ॥
 काशीनाथ हरिभट्ट बसु—रामानन्द ।
 दान देह श्रीगौरचन्द्रे पद—द्वन्द्व ॥
 ओहे कवि—कर्णपूर बलिये तोमार ।
 निरन्तर मग्न कर गौराङ्ग—लीलाय ॥
 कमलाकर—पिपलाइ शुन हे महेश ।
 मो पापीरे त्राणो यश घुषुक अशेष ॥

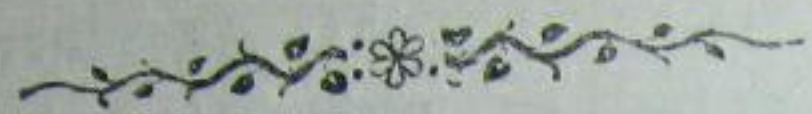
श्रीकान्त कमलाकान्त निवेदि निश्चय ।
 वैष्णव-चरणामृते येन निष्ठा हय ॥
 ओहे भाडुदास इहा पुनः पुनः बलि ।
 सन्वस्व होक् मोर वैष्णव-पद-धूलि ॥
 ओहे कालिदास मोर एइ बड़ आश ।
 वैष्णव-उच्छिष्टे येन बाड़ये विश्वास ॥
 श्रीजगदानन्द कीर्त्तनाया षष्ठावर ।
 गौरगुण गाइ शक्ति देह निरन्तर ॥
 प्रेममय श्रीमीनकेतन रामदास ।
 नित्यानन्द-गुणे मार कराह उल्लास ॥
 विजय-दास अनुपाम कर एइ सेन ।
 गौर-पादपद्म मुञ्जि ना छाड़िये येन ॥
 ओहे ब्रह्मानन्द श्रीपरमानन्द—पुरी ।
 भक्ति-पथे सतत राखह चुले धरि ॥
 जगाइ माधाइ दुइ भाइ दया कर ।
 अनेक जन्मेर पाप क्षणेके संहार ॥
 श्रीचन्द्रशेखर रघुपति उपाध्याय ।
 एइ कर सुसिद्धान्त स्फुरक हियाय ॥
 ओहे शिखि माहिता एइ कर मोर हित ।
 श्रीकृष्णचैतन्य जगन्नाथे रहु प्रीत ॥
 श्रीनाथ तुलसी-मिश्र काला-कृष्णदास ।
 मोरे उद्धारिया कर महिमा प्रकाश ॥
 सारङ्ग सुन्दरानन्द गोविन्द उदार ।
 संसार-यातना हते करह निस्तार ॥
 ओहे रत्नबाहु भवानन्द धनञ्जय ।
 कातरे करिले दया महिमा बाड़य ॥

ओहे वृन्दावन नारायणीर कुमार ।
 तोमरा थाकिते केन ए दशा आमार ॥
 उद्धारह यदुनाथ ठाकुर मुरारि ।
 बिषय-बिषेर ज्वाला सहिते ना पारि ॥
 ओहे प्रतापरुद्र राजा भिनति आमार ।
 काम क्रोध आदि दुष्टे करह संहार ॥
 शुन हे हिरण्य चिरञ्जीव नारायण ।
 नित्यानन्दाद्वैत-गौर-गुणे रहु मन ॥
 एइ कर बुद्धिमन्त-खान महाभति ।
 श्रीगौरसुन्दर मोर हौक प्राणपति ॥
 हृदयचैतन्य पूर्ण कर मार आश ।
 गौराङ्ग-गुण कहे ये, तार हड दास ॥
 एइ कर भगवान् श्रीगर्भ श्रीनिधि ।
 गौराङ्गेर ब्रजलीला बुझि निरबधि ॥
 ओहे श्रीप्रबोधानन्द निवेदि तोमारे ।
 गौर-गुणेते बारेक माताह आमारे ॥
 जगदीश श्रीमान् सञ्जय सुदर्शन ।
 मोरे केन छाड़ हज्जा पतित-पावन ॥
 द्विज हरिदास जगन्नाथ बलराम ।
 जगत् उद्धार कर मोरे केन वाम ॥
 गौर-प्रिय दण्ड-अधिकारी हरिदास ।
 मोरे दण्ड करि अपराध कर नाश ॥
 ओहे अभिराम एइ कहिये तोमारे ।
 पाषण्डी असुर हते रक्षा कर मोरे ॥
 ओहे रामानन्द राय रसेर सागर ।
 रसिक-भक्त-सङ्ग देह निरन्तर ॥

ओहे गौर-प्रिय श्रीगोविन्द भक्ति-राशि ।
 गौर-पादपद्म-सेवा देह दिवानिशि ॥
 गौर-पदे उपाधान ठाकुर शङ्कर ।
 गौर-अङ्ग-गन्धे मत्ता कर निरन्तर ॥
 प्रिय शुक्लाम्बर ओहे नदीया-निवासी ।
 मोरे घृणा करिले करिब लोके हासि ॥
 निरबधि एइ कर ठाकुर लोचन ।
 गौराङ्ग-गुणेते येन डुबे मोर मन ॥
 ओहे उत्सवानन्द बलि भूमिते लुटाये ।
 देशे देशे फिरि येन गौर-गुण गेये ॥
 श्रीपुरुषोत्तम रामदास देह एइ चाइ ।
 गौर-गुणे मत्ता हये नाचिये बेडाइ ॥
 ठाकुर मुकुन्द एइ करिते जुयाय ।
 गौर-कथा यथा तथा थाकि दीन-प्राय ॥
 ओहे श्रीपरमेश्वर दास देह एइ वर ।
 गौर-गुण शुनि येन कान्दि निरन्तर ॥
 अनन्त-आचार्य यदु-गाङ्गुली मङ्गल ।
 घुचाओ यतेक आमार आछे अमङ्गल ॥
 शिशु-कृष्णदास कृष्णदास-कविराज ।
 रक्षा कर एइवार करिनु दुष्ट-काज ॥
 ओहे श्रीनिवास नरोत्तम रामचन्द्र ।
 गण सह कर दया मुञ्जि अति मन्द ॥
 कि बलिव ओहे गौर-प्रिय परिवार ।
 नरहरि अनाथेर केह नाहि आर ॥
 आत्मनिवेदन एइ करि मुञ्जि स्तुति ।
 दिने दिने स्फुरे येन संप्रार्थना इति ॥

इति श्रीलनरहरि-दास-विरचितसपार्षद-श्रीगौराङ्ग-बन्दनासमाप्त ।

श्रीश्रीवैष्णव-बन्दना ।



श्रीकृष्णचैतन्य-नित्यानन्दे ना जानिया ।
निन्दिनु वैष्णवगण मानुष बलिया ॥
सेइ अपराधे मुञ्च व्याधिग्रस्त हैनु ।
मने बिचारिया एइ निरूपण कैनु ॥
निमाइ करिल कत पातकी उद्धार ।
परिणामे केन मोरे ना कैल निस्तार ॥
नाटशाला हइते यवे आइसेन फिरिया ।
शान्तिपुरे यान यवे भक्तगोष्ठी लैया ॥
सेइ काले दन्ते तृण धरि दूर हैते ।
निवेदिनु गौराङ्गेर चरण-पद्मेते ॥
पतित पावन-अवतार नाम से तोमार ।
जगाइ-माधाइ आदि करिले उद्धार ॥
ताहा हैते कोटिगुणे अपराधी आमि ।
अपराध क्षम प्रभु जगतेर स्वामी ॥
प्रभु आज्ञा दिला, अपराध श्रीबासेर स्थाने ।
अपराध हयेछे तोमार तार पड़ह चरणे ॥
प्रभुर आज्ञाय श्रीबासेर चरणे पड़िनु ।
श्रीबास-आगे से गौरेर आज्ञा समर्पिनु ॥
अपराध क्षमिला से आज्ञा दिला मोरे ।
पुरुषोत्तम-पदाश्रय कर गिया घरे ॥
वैष्णव-निन्दने तोमार एतेक दुर्गति ।
वैष्णव-बन्दना करि शुद्ध कर मति ॥

प्रभु-पादपद्म आमि मस्तके धरिया ।
बाङिल आरति चित्तो उल्लसित हिया ॥
वैष्णव गांमाञ्जर नाम-उद्देश-कारण ।
नाना क्षेत्र तीर्थ मुञ्चि करिनु गमन ॥
यथा यथा याँर नाम शुनिनु श्रवणे ।
याँर याँर पाद-पद्म देखिनु नयने ॥
शास्त्रे वा याँहार नाम देखिनु शुनिनु ।
सर्व भक्तेर नाम-माला ग्रन्थन करिनु ॥
इथे अग्र पश्चात् मोर दोष ना लइवा ।
ठाकुर वैष्णव मोर सकलि क्षमिवा ॥
एक ब्रह्माण्डे हय चौह भुवन ।
ताहाते वैष्णवगण करिया यतन ॥
जातिर बिचार नाइ वैष्णव-वर्णने ।
देवता असुर ऋषि सकलि समाने ॥
देवता गन्धर्व आदि मानुष आदि करि ।
इहाते वैष्णव येइ ताँरे नमस्करि ॥
पद्मपुराण आर श्रीभागवत-मत ।
बन्दिब वैष्णव प्रभुर सम्प्रदायी यत ॥
यत यत हीन जात उद्धवे वैष्णव ।
सबारे बन्दिब सबे जगत-दुर्लभ ॥
श्रीकृष्णचैतन्य-नित्यानन्द कृपामय ।
सर्व-अवतार-सर्वभक्तजनाश्रय ॥
पुलिन्द पुक्कश भील किरात यवने ।
आभीर कङ्क आदि करि सकलि समाने ॥
सुभोग शबर म्लेच्छ आदि करि यत ।
ब्रह्मा आदि चारि वेद सवार आराध्य ॥

आभीर राग

प्राण गोराचाँद मोर धन गोराचाँद ।
जगत बाँधिल गोरा पाति प्रेमकाँद ॥ध्रु॥
मिनति करिया तृण धरिया दशने ।
निवेदन करों गुरु-वैष्णव-चरणे ॥
श्रीकृष्णचैतन्य—नित्यानन्द-अवतारे ।
यतेक वैष्णव ताहा के कहिते पारे ॥
वैष्णव जानिते नारे देवेर शक्ति ।
मुबि कोन् छार हड शिशु अल्पमति ॥
जिह्वार आरति आर मनेर बासना ।
तेजि से करिते चाहों वैष्णव-बन्दना ॥
ये किछु कहिये गुरु-वैष्णव प्रसादे ।
क्रम भङ्ग ना लइवे मोर अपराधे ॥
बन्दों शची जगन्नाथ मिश्र पुरन्दर !
याँहार नन्दन विश्वरूप विश्वम्भर ॥
बन्दना करिब विश्वरूप धन्य धन्य ।
चैतन्य-अग्रज नाम श्रीशङ्करारण्य ॥
बन्दिब से महाप्रभु श्रीकृष्णचैतन्य ।
पतितपावन अवतार धन्य धन्य ॥
बन्दों लक्ष्मी ठाकुरानी आर विष्णुप्रिया ।
गदाधर पण्डित गोसाँझि बन्दना करिया ॥
बन्दों पद्मावती देवी हाडाइ पण्डित ।
याँर पुत्र नित्यानन्द अद्भुत-चरित ॥
दयार ठाकुर बन्दों प्रभु नित्यानन्द ।
याँहा हैते नाटे गीते सवार आनन्द ॥

बसुधा जान्हवा बन्दों दुइ ठाकुरानी ॥
याँर पुत्र बीरभद्र जगते वाखानि ॥
बीरभद्र गोसाँझि बन्दिब सावधाने ।
सकल भुवन बश याँर आचरणे ॥
जान्हवार प्रिय बन्दों रामाइ गोंसाँझि ।
ये आनिल गोडदेशे कानाइ बलाइ ॥
यैछे बीरभद्र जानि तैछे श्रीरामाइ ।
जान्हवा मातार आज्ञा इथे आन नाइ ॥
श्रीगोपीजनबल्लभ बन्दिब यतने ।
अद्भुत चरित्र याँर ना याय बरणे ॥
गोसाँझि श्रीरामचन्द्र बन्दिब सादरे ।
जीव उद्धारिते यिहँ बहु गुण धरे ॥
गोसाँझि श्रीरामकृष्ण बंदों एकमने ।
याँहार अशेष गुण जगते बाखाने ॥
नित्यानन्द-सुता बन्दों गङ्गा ठाकुराणी ।
भुवन भारिया याँर सुयश वाखानि ॥
दयार ठाकुर बन्दों यतेक वैष्णव ।
याँदेर कृपाय पाइ श्रीराधामाधव ॥

भाटियारी राग

धन्य अवतार गोरा न्यासि-चूड़ामणि ।
एमन सुन्दर नाम कोथाओ ना शुनि ॥ध्रु॥
सावधाने बन्दिब श्रीमाधवेन्द्रपुरी ।
विष्णुभक्ति—पथेर प्रथम अवतरी ॥
आचार्य-गोसाँझि बन्दों अद्वैत ईश्वर ।
ये आनिल महाप्रभु भुवन-भितर ॥

सीता ठाकुराणी बन्दों हज्जा एक मन ।
 श्रीअच्युतानन्द बन्दों तौहार नन्दन ॥
 बन्दिव श्रीश्रीनिवास ठाकुर पण्डित ।
 नारद खेयाति यार भुवन-पूजित ॥
 भक्ति करि बन्दिव मालिनी ठाकुराणी ।
 श्रीमुखे गौराङ्ग यारे बलिला जननी ॥
 श्रीनारायणी देवी बन्दिव साबधाने ।
 आलबाटी प्रभु यारे बलिल-आपने ॥
 हरिदास ठाकुर बन्दों विरक्त-प्रधान ।
 द्रव्य दिया शिशुरे लओथाइला हरिनाम ॥
 गोपीनाथ ठाकुर बन्दों जगत-बिरुयात
 प्रभुर स्तुतिपाठे येइ ब्रह्मा साक्षात ॥
 बन्दिव मुरारि गुप्त भक्तिशक्तिमन्त ।
 पूर्व अवतारे यार नाम हनुमन्त ॥
 श्रीचन्द्रशेखर बन्दों चन्द्र सुशीतल ।
 आचार्यरत्न यार ख्याति निरमल ॥
 गोविन्द गरुड़ बन्दों महिमा अपार ।
 गौरपदे भक्तिद्वारे यार अधिकार ॥
 बन्दिव अम्बष्ठ नाम श्रीमुकुन्द दत्त ।
 गन्धर्व जिनिया यार गानेर महत्त्व ॥
 बासुदेव दत्ता बन्दों बड़ शुद्धभावे ।
 उक्तेले यौहारे प्रभु राखिला समीपे ॥
 बन्दों महा निरीह पण्डित दामोदर ।
 पीताम्बर बन्दों तार ज्येष्ठ सहोदर ॥
 बन्दों श्रीजगन्नाथ शङ्कर नारायण ।
 बड़ उदासीन एइ भाइ पञ्चजन ॥

बन्दों महाशय चक्रवर्ती नीलाम्बर ।
 प्रभुर भविष्य यह कहिला सत्वर ।
 श्रीराम पण्डित बन्दों गुप्त नारायण ।
 बन्दों गुरु विष्णु गङ्गादास सुदर्शन ॥
 बन्दों सदाशिव आर श्रीगर्भ श्रीनिधि ।
 बुद्धिमन्त खान बन्दों आर विद्यानिधि ॥
 बन्दिव धार्मिक ब्रह्मचारी शुक्लाम्बर ।
 प्रभु यार दिल निज प्रेमभक्ति वर ॥
 नन्दन आचार्य बन्दों लेखक विजय ।
 बन्दों रामदास कविचन्द्र महाशय ॥
 बन्दों खोलावेचा-ख्याति पण्डित श्रीधर ।
 प्रभु-सङ्गे यार नित्य कौतुक कोन्दल ॥
 बन्दों भिक्षु बनमाली पुत्रे सहिते ।
 प्रभुर प्रकाश ये देखिला आचम्बिते ॥
 हलायुध ठाकुर बन्दों करिया आदर ।
 बन्दना करिव श्रीबासुदेव भादर ॥
 बन्दिव ईशानदाम करयोड़ करि ।
 शची ठाकुरानी यार स्नेह कैल बड़ि ॥
 बन्दों जगदीश आर श्रीमान् सञ्जय ।
 गरुड़ काशीश्वर बन्दों करिया विनय ॥
 बन्दना करिव गङ्गादास कृष्णानन्द ।
 श्रीराय मुकुन्द बन्दों करिया आनन्द ॥
 बल्लभ आचार्य बन्दों जगजने जानि ।
 यार कन्या आपनि श्रीलक्ष्मी ठाकुरानी ॥
 सनातन मिश्र बन्दों आनन्दित हैया ।
 यार कन्या धन्या ठाकुरानी विष्णुप्रिया ॥

आचार्य बनमाली बन्दों द्विज काशीनाथ ।
प्रभुर बिवाहे यिँह घटक साक्षात् ॥
प्रभुर बिवाहोत्सवे छिल यत जन ।
ताँ सवार पादपद्म बन्दि सर्वक्षण ॥

सुहृद् राग—

भाल अवतार श्रीगोराङ्ग अवतार ।
ऐमन करुणानिधि कभु नाहि आर ॥ध्रु॥
गोसावि ईश्वरपुरी बन्दों सावधाने ।
लोकशिक्षादीक्षा प्रभु कैल यँर स्थाने ॥
केशव भारती बन्दों सान्दीपनी मुनि ।
प्रभु यँरे न्यासी गुरु करिला आपनि ॥
बन्दिब श्रीरामचन्द्र—पुरीर चरण ।
प्रभु यँरे कहिलेन श्रीरामेर गण ॥
परमानन्दपुरी बन्दों उद्धव-स्वभाव ।
दामोदरपुरी बन्दों सत्यभामार भाव ॥
नरसिंहतार्थ बन्दों पुरी सुखानन्द ।
श्रीगोविन्दपुरी बन्दों पुरी ब्रह्मानन्द ॥
नृसिंहपुरी बन्दों सत्यानन्द भारती ।
बन्दिब गरुड अवधूत महामति ॥
बिष्णुपुरी गोसावि बन्दों करिया यतन ।
बिष्णुभक्तिरत्नावली यँहार ग्रन्थन ॥
ब्रह्मानन्दस्वरूप बन्दों वड़ भक्ति करि ।
कृष्णानन्दपुरी बन्दों श्रीराघवपुरी ॥
विश्वेश्वरानन्द बन्दों विश्वपरकाश ।
महाप्रभुर पदे यँर विशेष विश्वास ॥

श्रीकेशवपुरी बन्दों अनुभवानन्द ।
बन्दिब भारती-शिष्य नाम चिदानन्द ॥
श्रीवंशीवदन बन्दों युडि दुइ कर ।
यँरे वंशी-अवतार कैला गदाधर ॥
गौराङ्गेर प्राणसम श्रीवंशीवदन ।
यँहार शरणे मिले चैतन्य-चरण ॥
बन्दों रूप सनातन दुइ महाशय ।
वृन्दावनभूमि दुहेँ करिला निर्णय ॥
श्रीजीव गोसावि बन्दों सवार सम्मत ।
सिद्धान्त करिया ये राखिल भक्तितत्त्व ॥
रघुनाथदास बन्दों राधाकुण्डवासी ।
राघव गोसावि बन्दों गोवर्द्धन-बिलासी ॥
बन्दिब गोपालभट्ट वृन्दावन-माफे ।
सनातन-रूप-सङ्गे सतत बिराजे ॥
रघुनाथभट्ट बन्दों प्रभुर आज्ञाते ।
वृन्दावने अध्यापक श्रीश्रीभागवते ॥
काशीश्वर गोसावि बन्दों हज्जा एकमति ।
मथुरामण्डले यँर विशेष खेयाति ।
शुद्ध सरस्वती बन्दों बड़ शुद्धमति ।
प्रभुर चरणे यँर विशुद्ध भक्ति ॥
प्रबोधानन्द गोसावि बन्दिब यतने ।
ये करिला महाप्रभुर गुणेर बणने ॥
लोकनाथ गोसावि बन्दों भूगर्भ ठाकुर ।
दीनहीन लागि यँर करुणा प्रचुर ॥
जगदानन्द पण्डित बन्दों साक्षात् सरस्वती ।
प्रभु यँरे करिलेन परम पिरीति ॥

महा-अनुभव बन्दों पण्डित राघव ।
 पाणिहाटी प्रामे यँर प्रकाश वैभव ॥
 पुरन्दर पण्डित बन्दों अङ्गद-विक्रम ।
 सपरिवारे लाङ्गूल यँर देखिला ब्राह्मण ॥
 काशीमिश्र बन्दों प्रभु यँहार आश्रमे ।
 बाणीनाथ पट्टनायक बन्दिब सम्भ्रमे ॥
 श्रीप्रद्युम्नमिश्र बन्दों राय भवानन्द ।
 कलानिधि सुधानिधि गोपीनाथ बन्दों ॥
 राय रामानन्द बन्दों बड़ अधिकारी ।
 प्रभु यँरे लभिला दुर्लभ ज्ञान करि ॥
 बकेश्वर पाण्डित बन्दों दिव्य-शरीर ।
 अभ्यन्तरे कृष्णतेज गौराङ्ग बाहिर ॥
 बन्दिब सुग्रीव-मिश्र श्रीगोविन्दानन्द ।
 प्रभु लागि मानसिक यँर सेतुबन्ध ॥
 सम्भ्रमे बन्दिब आर गदाधरदास ।
 वृन्दावने आतिशय यँहार प्रकाश ॥
 सदाशिव कविराज बन्दों एकमने ।
 सकल वैष्णव बश यार प्रेमगुणे ॥
 प्रेममय-तनु बन्दों सेन शिवानन्द ।
 जाति प्राण धन यँर गोरापद-द्वन्द्व ॥
 चैतन्यदास रामदास आर कर्णपूर ।
 शिवानन्देर तिन पुत्र बन्दिब प्रचुर ॥
 बन्दिब मुकुन्द-दत्ता भावे शुद्धचित्त ।
 मयूरेर पाखा देखि हइला मूर्च्छित ॥
 प्रेमेर आलय बन्दों नरहरिदास ।
 निरन्तर यँर चित्तो गौराङ्ग-बिलास ॥

मधुर-चरित्र बन्दों श्रीरघुनन्दन ।
 आकृति प्रकृति यँर भुवन-मोहन ॥
 सकल-महान्तप्रिय श्रीरघुनन्दन ।
 निताइ दिलेन यँरे सुमाल्य चन्दन ॥
 प्रेमसुखमय बन्दों कानाइ - ठाकुर ।
 महाप्रभु दया यँरे कारिला प्रचुर ॥
 रघुनाथदास बन्दों प्रेमसुधामय ।
 यँहार चरित्रे सब लोक बश हय ॥
 आचार्य पुरन्दर बन्दों पण्डित देवानन्द ।
 गौर-प्रेममय बन्दों श्रीआचार्यचन्द्र ॥
 आकाइ हाटेर बन्दों कृष्णदास - ठाकुर ।
 परमानन्द - पण्डित बन्दों सतीर्थ प्रभुर ॥
 गोविन्द - घोष - ठाकुर बन्दों सावधाने ।
 यँर नाम सार्थक प्रभु करिला आपने ॥
 बन्दिब माधव घोष प्रभुर प्रीतिस्थान ।
 प्रभु यँरे करिला अभ्यङ्ग-स्वरदान ॥
 श्रीबासुदेव - घोष बन्दिब सावधाने ।
 गौरगुण विना येइ अन्य नाह जाने ॥
 ठाकुर श्रीअभिराम बन्दिब सादरे ।
 षोल-साङ्गेर काष्ठ येँहो वंशी करे धरे ॥
 सुन्दरानन्द ठाकुर बन्दिब बड़ आशे ।
 फुटाल कदम्बफुल जम्बीरेर गाछे ॥
 परमेश्वरदास ठाकुर बन्दों सावधाने ।
 शृगाले लओयान नाम संकीर्तन-स्थाने ॥
 इष्टदेव बन्दों श्रीपुरुषोत्तम नाम ।
 के कहिते पारे तँर गुण अनुपाम ॥

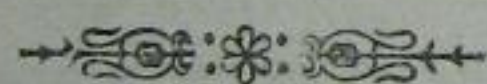
सर्वगुणहीन ये ताहारे दया करे ।
 आपनार सहज-करुणाशक्ति-बले ॥
 सप्तम बत्सरे यार श्रीकृष्ण-उन्माद ।
 भुवनमोहन नृत्य शर्कति अगाध ॥
 गौरीदास कीर्त्तनीयार केशेते धरिया ।
 नित्यानन्द-स्तव कराइला शक्ति दिया ॥
 गदाधरदास आर श्रीगोविन्द घोष ।
 याँहार प्रकाश देखि प्रभुर सन्तोष ॥
 यार अष्टोत्तरशत घट गङ्गाजले ।
 अभिषेक सर्वज्ञाता हन शिशुकाले ॥
 करवीर मञ्जरी आछिल यार काने ।
 पद्म-गन्ध हैल ताहा सवा विद्यमाने ॥
 यार नामे स्निग्ध हय वैष्णव सकल ।
 मूर्तिमन्त प्रेमसुख यार कलेवर ।
 काला कृष्णदास बन्दों वड़ भक्ति करि ।
 दिव्य उपवीत बस्त्र कृष्णतेजोधारी ॥
 कमलाकर पिपलाई बन्दों भावबिलासी ।
 ये प्रभुरे बलिल लह वेत्र देह वाँशी ॥
 रत्नाकरसुत बन्दों पुरुषोत्तम नाम ।
 नदीया बसति यार दिव्य-तेजोधाम ॥
 उद्धारण दत्त बन्दों हज्या सावहित ।
 नित्यानन्द-सङ्गे वेडाइला सर्वतीर्थ ॥
 गौरीदास पण्डित बन्दों प्रभुर आज्ञाकारी ।
 आचार्य गोसाविर निल उत्कल-नगरी ॥
 पुरुषोत्तम पण्डित बन्दों बिलासी सुजन ।
 प्रभु यारै दिला आचार्य-गोसाविर स्थान ॥

बन्दिब सारङ्ग दास हज्या एकमन ।
 मकरध्वज - कर बन्दों प्रभुर गायन ॥
 रुद्रारि कविराज बन्दों भागवताचार्य ।
 श्रीमधु पण्डित बन्दों अनन्त आचार्य ॥
 गोविन्द आचार्य बन्दों सर्वगुणशाली ।
 ये करिल राधाकृष्णोर विचित्र धामाली ॥
 सार्वभौम बन्दों बृहस्पतिर चरित्र ।
 प्रभुर प्रकाशे यार अद्भुत कवित्व ॥
 बन्दिब प्रतापरुद्र इन्द्रधुम्न-रुयाति ।
 प्रकाशिला प्रभु यारै षड्भुज आकृति ॥
 द्विज रघुनाथ बन्दों उड़िया बिप्रदास ।
 अभिन्न अच्युत बन्दों आचार्य श्यामदास ॥
 द्विज हरिदास बन्दों वैद्य बिष्णुदास ।
 यार गीत शुनि प्रभुर अधिक उल्लास ॥
 कानाइ खुटिया बन्दों विश्व-परचार ।
 जगन्नाथ बलराम दुइ पुत्र यार ॥
 बन्दों उड़िया बलराम दास महाशय ।
 जगन्नाथ बलराम यार बश हय ॥
 जगन्नाथ दास बन्दों सङ्गीत-पण्डित ।
 यार गान-रसे जगन्नाथ विमोहित ॥
 बन्दिब शिवानन्द पण्डित काशेश्वर ।
 बन्दिब चन्दनेश्वर आर सिंहेश्वर ॥
 बन्दिब सुबुद्धि-मिश्र मिश्र-श्रीश्रीनाथ ।
 तुलसी-मिश्र बन्दों माहिती काशीनाथ ॥
 श्रीहरिभट्ट बन्दों माहिती बलराम ।
 बन्दों पट्टनायक साधव यार नाम ॥

वसुवंश रामानन्द बन्दिब यतने ।
 यँर वंशे गौर विना अन्य नाहि जाने ॥
 बन्दिब पुरुषोत्तम नाम ब्रह्मचारी ।
 श्रीमधु पण्डित बन्दों बड़ अधिकारी ॥
 श्रीकर पण्डित बन्दों द्विज रामचन्द्र ।
 सर्व सुखमय बन्दों यदु कविचन्द्र ॥
 विलासी वैरागी बन्दों पण्डित धनञ्जय ।
 सर्वस्व प्रभुरे दिया भाण्ड हाते लय ॥
 जगन्नाथ पण्डित बन्दों आचार्य लक्ष्मण ।
 श्रीकृष्ण पण्डित बन्दों बड़ शुद्धमन ॥
 सूर्यदास पण्डित बन्दों विरुयात संसारे ।
 वसुधा जाहवा दुइ कन्या यँर घरे ॥
 मुरारि चैतन्यदास बन्दों सावधाने ।
 आश्चर्य चरित्र यँर प्रह्लाद-समाने ॥
 परमानन्द-गुप्त बन्दों सेन-जगन्नाथ ।
 कविचन्द्र मुकुन्द बालक रमानाथ ॥
 श्रीकंसारि सेन बन्दों सेन श्रीबल्लभ ।
 भास्कर ठाकुर बन्दों विश्वकर्मा अनुभव ॥
 सङ्गीत-रचक बन्दों बलराम दास ।
 नित्यानन्दचन्द्रे यँर सुदृढ़ विश्वास ॥
 महेश शण्डि बन्दों बड़ उन्मादी ।
 जगदीश पण्डित बन्दों नृत्यविनोदी ॥
 नारायणीसुत बन्दों वृन्दाबनदास ।
 यँहार कवित्व गीत जगते प्रकाश ॥
 बड़गाछिर बन्दिब ठाकुर कृष्णदास ।
 प्रेमानन्द नित्यानन्दे यँहार विश्वास ॥

परमानन्द अवधौत बन्दों एकमने ।
 सर्वदा उन्मत्ता ग्रिह बाह्य नाहि जाने ॥
 बन्दिब से अनादि गङ्गादास पण्डित ।
 यदुनाथ दास बन्दों मधुर-चरित ॥
 पुरुषोत्तमपुरी बन्दों तीर्थ-जगन्नाथ ।
 श्रीराम-तीर्थ बन्दों पुरी रघुनाथ ॥
 बासुदेव तीर्थ बन्दों आश्रमी उपेन्द्र ।
 बन्दिब अनन्तपुरी हरिहरानन्द ॥
 मुकुन्द कविराज बन्दों निर्मल-चरित ।
 बन्दिब आनन्दमय श्रीजीव पण्डित ॥
 बन्दना करिव शिशु कृष्णदाम नाम ।
 प्रभुर पालने यँर दिव्य तेजोधाम ॥
 माधव आचार्य बन्दों कवित्व शीतल ।
 यँहार रचित गीत श्रीकृष्णमङ्गल ॥
 गौरीदास पण्डितेर अनुज कृष्णादास ।
 बन्दिब नृसिंह आर श्रीचैतन्यदास ॥
 रघुनाथ भट्ट बन्दों करिया विश्वास ।
 बन्दों दिव्य-लोचन श्रीरामचन्द्र दास ॥
 श्रीशङ्कर बन्दों बड़ अकिञ्चन-रीति ।
 डम्फेर बाद्ये ते ये प्रभुर कैल प्रीति ॥
 प्रेमानन्दमय बन्दों आचार्य माधव ।
 भक्तिवले हैला गङ्गादेवीर बल्लभ ॥
 नारायण पैडारि बन्दों चक्रवर्ती शिवानन्द ।
 बन्दना करिते वैष्णवेर नाहि अन्त ॥
 एइ अबतारे यत अशेष वैष्णव ।
 कहने ना याय सबार अनन्त वैभव ॥

अनन्त वैष्णवगण अनन्त महिमा ।
हेन जन नाहि ये करिते पारे सीमा ॥
बन्दना करिते मोर कत आछे बुद्धि ।
वेदेह जानिते नारे वैष्णवेर शुद्धि ॥
सबाकार उपदेशा वैष्णव ठाकुर ।
श्रवण—नयन—मन—बचनेर दूर ॥
शरण लइया भज वैष्णव—चरणे ।
संक्षेपे कहिल किछु वैष्णव—बन्दने ॥
वैष्णव—बन्दना पड़े शुने येइ जन ।
अन्तरेर मल घुचे शुद्ध हय मन ॥
प्रभाते उठिया पड़े वैष्णव—बन्दना ।
कोन काले नाहि पाय कोनइ यन्त्रणा ॥
देवेर दुर्लभ सेइ प्रेमभक्ति लभे ।
देवकीनन्दन दास कहे एइ लोभे ॥
इति श्रीश्रीवैष्णव-बन्दना समाप्ता ।



श्रीभक्तनामावली

❀ श्रीराधानवगोविन्ददेवौ जयतः ❀



दोहा-प्रनमहुँ नव गोविन्द नव राधा कुवरि अनूप ।
नवद्वीप मधि नित लसै गौर गदाधर रूप ॥१॥
नित्यानन्द चैतन्य वपु राम कृष्ण शशि सूर ।
वृन्दावन अंतर सुवन लसै तिमिर करि दूर ॥२॥

सोरठा-जग मधि संत अनंत अंत न होइ अनन्त मुख ।
को वरनै बुधिवंत विन प्रसाद सियकंत के ॥३॥
मूक होइ वाचाल गिरिवर लांचै पंगु जहँ ।
अस मम नाथ कृपाल सीतापति अद्वैतवर ॥४॥
दुरगम सुगम सुहोय दुस्कर निकर सुकर जहँ ।
अस मम प्रभु मद जोय दुर्घट घटन समर्थ वर ॥५॥
इनके पद चित लाइ मति अनुसार सुमंद मति ।
रच्यौ चहतु भारि चाह हरिवल्लभ नामावली ॥६॥
दोहा-नित्यानन्द चैतन्य के भ्राजहि अनगन संत ।
अनुरागी सुठि अमल मति बड भागी रसवंत ॥७॥
एक एक के चरित जिमि सुर सरिता सतधार ।
कन परसत जाके नसै कलि कलमम निरधार ॥८॥
ताहू मैं पुन देखियतु कछु परगट वल्लु गूढ़ ।
जिहि वरनत में होइ अति सुरगुरु की मति मूढ़ ॥९॥
तिहि वरनन हित जास के वाढै चित महि चाइ ।
जिमि वालक अति सुग्धमति निरखि चंद ललचाइ ॥१०॥
सुर प्रसाद अभ्यास सुठि अरु वितपाति सुख साज ॥
कारन काव्य सुकहत हैं जाहि सुमित कविराज ॥११॥
सो संतानि के विगत मत जातें लौकिक रीति ।
काज अलोकिक माँहि पुन कारण लोकातीति ॥१२॥
हारि गुरु हरिजन तत्व सम मम परभाव सुतीन ।
तिह वरनन माहि होइ पुन जे प्रवीन रसलीन ॥१३॥
हरि गुरु हरिवल्लभ कृपा कारन सुठि तहँ जोइ ।
कारन लोकातीति विनु वरन फुरै नहि कोइ ॥१४॥
हरिवल्लभ परसाद बल सुखद देवकीनन्द ।
रची सु वैष्णवबन्दना सरस सुरस सुखकंद ॥१५॥

ताकौ संतनिदेश पुन संतनि हित विन खेद ।
 रचत भक्त नामावली ग्रन्थ जु भाषा भेद ॥१६॥
 सोरठा-नमहुँ गौरवरचन्द नित्यानन्द अनन्द भरि ।
 सम करुना रस कन्द पूरन परमानन्द वपु ॥१७॥
 जे परिकर सुख रूप चारु अमित अवतार गत ।
 तिन के सरन सरूप भ्राजाहँ परम अनूप जू ॥१८॥
 दोहा-नमहुँ सची पुन मिश्रवर जगन्नाथ सुखकंद ।
 विश्वरूप रसरूप अरु गौरचंद जिहि नंद ॥१९॥
 अति अनन्य गति जाचि हों विश्वरूप पद धन्य ।
 अग्रज श्री चैतन्य सुभ नाम संकरारन्य ॥२०॥
 नमहु कृष्णचैतन्य प्रभु करि बिनती जु अपार ।
 अगम निगम दुर्गम प्रकट करुणालय अवतार ॥२१॥
 लछमी पद रज जाचि हों विष्णुप्रिया गुन गाइ ।
 सुधर गदाधर पंडित हि सीस नाइ भरि भाइ ॥२२॥
 पद्मावति पद बरनिहों द्विजवर वहुरि मुकुंद ।
 जिहि सुत जगदानंद कर भ्राजत नित्यानंद ॥२३॥
 प्रणम हुँ नित्यानंद प्रभु नित्यानन्द सरूप ।
 पतितांत के गति रूप आत प्रगट प्रभाव अनूप ॥२४॥
 प्रणम हुँ वसुधा जान्हवी वीरचन्द जिहि नन्द ।
 वीरचंद पुन बरनि हों दुर्गत अमंद रसकंद ॥२५॥
 परमादर प्रणम हुँ पुरी माधवेन्द्र रसरास ।
 दुरी भक्ति भगवंत की जिन कीनी परकास ॥२६॥
 श्री अद्वैत सुईस पद रज धरिहों निज सीस ।
 जिन लायौ इहि जगत माहि गौर धाम जगदीस ॥२७॥
 सिय चरननि सिर नाइ हों हँ हरषित भरि भाइ ।
 श्रीअच्युत पद पकज हि मन मधुकर सरसाइ ॥२८॥

श्री निवास पंडित नम हुँ श्री निवास प्रियदास ।
 प्रेमरासि अति जास को जिम नारद परकास ॥२९॥
 हँ पुलकित पुन वरनि हों मालिनि हरसित काय ।
 हरषि हरषि जिहि गौरहरि कही मात सुत भाय ॥३०॥
 सोरठा-प्रभु कसल रसभोय जाहि आलवाटी बढत ।
 बड़ भगिनी जग जोय नमहुँ नाम नारायणी ॥३१॥
 उदासीन सिरमौर हरिवल्लभ हरिदास वर ।
 रटत बाल हित कौर हरषि नाम हरिदेव जहँ ॥३२॥
 दोहा-वरन हुँ गोपीनाथ पद नमित माथ भरि चाव ।
 प्रभु अस्तुति महि चतुरवर चतुरानन परभाव ॥३३॥
 भक्ति सक्तिधारी नमहुँ गुपत सुरारि प्रकास ।
 हनूमान अनुमानियेँ रामचन्द्र पद दास ॥३४॥
 वरनहुँ सेषर चंद पद चित चकोर सरसाय ।
 श्री आचारज रत्न कौं हिय संपुट महि लाय ॥३५॥
 प्रनम हुँ श्रीगोविन्द वर वैनतेय परभाव ।
 गौरधाम अभिराम पद प्रीति रीति अति चाव ॥३६॥
 चाय भाय चित लाय पुन वरन हुँ दत्त मुकुन्द ।
 गान कला गंधर्व जिमि सरस सुरस सुखकन्द ॥३७॥
 वासुदेव हिय माहि लसऊ दत्तावंश कुलदीप ।
 उत्कल माहि श्री गौरवर राखे चरन समीप ॥३८॥
 दामोदर पण्डित नमहुँ वर पीतांबर संग ।
 जगन्नाथ संकर वहुरि नारायण भरि रंग ॥३९॥
 तजि असार संसार रति प्रभु चरननि मति सांच ।
 उदासीन परवीन ए भ्राजहि भ्रात सुपांच ॥४०॥
 श्री नीलांबर चक्रवै त्रिकालज्ञ सुख रास ।
 हौंन हार प्रभु चरित लै जिन कीनौ परकास ॥४१॥

नमहुँ रामश्री गुप्तवर नारायण अभिराम ।
 विष्णु गंग भारि रंग पुन दास सुदरसन नाम ॥४२॥
 नमहुँ सदासिव श्रीगरभ श्रीनिधि अरु बुधिवंत ।
 खान विदित रसखानि पुन विद्यानिधि सुठि सत ॥४३॥
 बहुरि ब्रह्मचारी नमहुँ शुक्लावर करि नेम ।
 जिहि वर दीनौ गौरवर प्रेमभक्ति भारि प्रेम ॥४४॥
 नंदन आचारज नमहुँ लेखक विजै महंत ।
 लिख लिख दीने हैं प्रभुहि अमित ग्रंथ रसवंत ॥४५॥
 रामचंद कविचंद अरु श्रीधर जग परकास ।
 जिहि प्रभु संग सुरंग भारि नाचत करि परिहास ॥४६॥
 भिछुक वनमाली बहुरि गुनसाली तिहि नंद ।
 प्रभु पर भाव सुचाव भारि जिन देख्यौ सुख कंद ॥४७॥
 नाम हलायुध धाम सुख नित वरन हुँ भारि भाय ।
 वासुदेव भादर बहुरि आति आदर सरसाय ॥४८॥
 सो०-सानुराग जुरि पानि श्री ईसान वरनि हौं ।
 सची दास निज जानि नेह रासि कीनी सुजाहि ॥४९॥
 दोहा-सीस नाइ जगदीस पद श्रीमान हि सनमानि ।
 प्रनमहुँ कासीस्वर गरुड संजय जुरि जुग पानि ॥५०॥
 गोंगदास रसकंद अरु वरनहुँ कृष्णानंद ।
 नित स्वछंद मति जाचिहौं पदरज राय मुकंद ॥५१॥
 आचारज बल्लभ नमहुँ दुल्लभ जिनकी रीति ।
 जिहि तनु जासुठि सिधुजा लोकरीति परतीति ॥५२॥
 नमहुँ सनातन मिश्रवर नम वच आठौं जाम ।
 जिहि कन्या धन्या विदित विष्णुप्रिया प्रिय नाम ॥५३॥
 वनमाली आचारज रु कासोपाति द्विजराज ।
 प्रभु विवाह उत्साह महि घटकराज सुखसाज ॥५४॥

पुरीजु ईश्वर वरनि हौं प्रेमरीति भरि प्रीति ।
 लीनी दिख्या गौरवर सिख्या लोक प्रतीति ॥५५॥
 वरन हुँ कैसौ भारती सांदीपन सुखरास ।
 गुरु गौरव श्री गौरवर कीनौ जाहि प्रकास ॥५६॥
 पुरी रामचंद हि रटत घटत अवट हिय पीर ।
 कहे गौरवर धीर जिहि नाहि न गन रघुवीर ॥५७॥
 पुरी सुपरमानन्द सुठि ऊधो माधो मीत ।
 पुरी जु दामोदर नमहुँ सतभाभा परतीति ॥५८॥
 तीरथ वर नरसिंह श्री ब्रह्मानन्द प्रवीन ।
 सुखानन्द गोविंद पुनि वरन हुँ पुरी सुतीन ॥५९॥
 सत्यानन्द सुभारती अरु नरसिंहानन्द ।
 मति विसाल अबधूत वर गरुड नाम सुखकंद ॥६०॥
 विष्णुपुरी पद वरनि हौं विष्णुभक्ति रसरूप ।
 विष्णुभक्ति रतनावली जिहि उर लसत अनूप ॥६१॥
 ब्रह्मानन्द स्वरूप अरु कृष्णानन्द अनूप ।
 पुरी राघवानन्द पुन भक्त भूप रस रूप ॥६२॥
 विश्व विदित गुन वरनिहौं विश्वेश्वर सुठि रीति ।
 गौरधाम अभिराम पद प्रीति रीति परतीति ॥६३॥
 पुरी जु कैसौ वरनि हौं विदित अनुभवानन्द ।
 नमहुँ भारती सिष्यवर चिदानन्द रुखकन्द ॥६४॥
 रूप सनातन वरनि हौं जानि सनातन रूप ।
 भूमि प्रेम ब्रज-भूमि महि जिनकौ निलय अनूप ॥६५॥
 बहुरि नमहुँ श्री जीवपद करि निहचै एकांत ।
 भक्ति तत्व राखे सुकरि श्रुति सम्मत सिद्धान्त ॥६६॥
 दास विदित रघुनाथ अरु राघो पद जिय आस ।
 राधासर गिरिवर प्रगट नित जिहि वास विलास ॥६७॥

नमहुँ भट्टगोपाल पद अति उमंग भरि रंग ।
 बृन्दावन मधि नित लसै रूप सनातन संग ॥६८॥
 लोकनाथ पद वरनिहौं करि विनती निज माथ ।
 प्रनम हुँ श्री भूगर्भ पुनि दीन जननि के नाथ ॥६९॥
 गुन अनंत पुन वरनि हौं श्री कासीस्वर संत ।
 ब्रजमंडल महि जासके परचै रास अनंत ॥७०॥
 बहुरि नमहुँ अति सुद्वमति सरस्वती सुठि सुद्ध ।
 प्रभु चरननि महि जास कौ प्रगट प्रेम अबिरुद्ध ॥७१॥
 नमहुँ प्रबोधानंद वर करि रति मति सुअनन्य ।
 वरन्यो श्रीचैतन्य कौ विमल चरित अति धन्य ॥७२॥
 प्रगट भट्ट रघुनाथ पद वरनहुँ हिय हरषाँहि ।
 कथिया श्री भागौत कौ श्रीवृन्दावन माँहि ॥७३॥
 वांती सुखदानी मनहु पण्डित जगदानंद ।
 गौरकृपा को पर विदित प्रेम रास सुखकंद ॥७४॥
 पनिहाटी वासी नमहुँ सेखरासी भरि चाव ।
 पंडित राघो जानि अरु मानि अमित परभाव ॥७५॥
 सो०-प्रबल वलीसुत बाल नमहुँ पुरन्दर पंडित हि ।
 निरखत पृच्छ विमल लै निजगन द्विज चकित है ॥७६॥
 दो०-मिश्र वंश परसंस महि कासी पद चित लाय ।
 वरन हुँ वांतीनाथ पुन सुठि पट नाइक गाय ॥७७॥
 अधिकारी भारी नमहुँ रामानंद सु राय ।
 ज्ञानसु लीनौ गौरवर दुर्लभ वल्लभ भाय ॥७८॥
 पंडित वक्रेश्वर नमहुँ दिपत अलौकिक रूप ।
 गौर स्याम दुधरचौ दुखचौ दुर्गम भेव अनूप ॥७९॥
 नाथ प्रीव सुप्रीव पद अरु गोविन्दानन्द ।
 गौरचन्द हित मानसी रच्यौ सेतु सुखकन्द ॥८०॥

दास वंश नभ चन्द्रवर उदित गदाधर नाम ।
 श्रीवृन्दावन धाम मधि जिहि विलास अभिराम ॥८१॥
 सदा सदाशिव गायहौं सुठि कविराज प्रकाश ।
 प्रेम पास महि जास के सुदृढ़ बंधे हरिदास ॥८२॥
 प्रेम ऐन वर सैन श्रीसिवानंद पद जोय ।
 कुल कांन रु धन प्राण जिहि गौरचंद पद दोय ॥८३॥
 मो०-नाहिन देख्यौ कोय प्रेमी परम मुकुन्द सम ।
 गिरचौ मूरछित होय मोर पुच्छ लखि स्वच्छ मति ॥८४॥
 दो०-प्रेम सुधारस रास बपु नम हुँ नरहरिदास ।
 जिहि अन्तरनभ महि सदा गौर चंद परकास ॥८५॥
 जग वंदन पद वरनि हौं रघुनन्दन भरिचाय ।
 भक्त भूप सुठि रूप अरु सीतल मत सब काय ॥८६॥
 कन्हाई ठाकुर नमौ प्रेमानन्द स्वरूप ।
 करी महा प्रभु दयानिधि जिहि पै दया अनूप ॥८७॥
 रघुनाथ दास वन्द हुँ जु प्रेम सुधा की रासि ।
 जिनके चरितन वस्य सब होहि जगत के वासि ॥८८॥
 नमौ पुरन्दराचार्य अरु पण्डित देवानन्द ।
 गौर प्रेम की राशि जो श्रीआचारज चन्द ॥८९॥
 कृष्णदास ठाकुर नमौ हाट अकाई वास ।
 सह वासी प्रभुके नमहुँ परमानंद सुख रासि ॥९०॥
 सावधान है कै नमहुँ ठाकुर गोविंद घोष ।
 नाम सार्थक कियो प्रभु करि संकीरतन पोष ॥९१॥
 वन्दहुँ माधव घोष जो श्री प्रभु प्रीति निवास ।
 दान कियो चैतन्य प्रभु जिहि अभंग स्वर रासि ॥९२॥
 वासुदेव घोष वन्दौ सावधान थिर भाव ।
 नहीं गौरगुण राशि विनु और जासु चित भाव ॥९३॥

अति आदर वन्दन करहुँ ठाकुर श्री अभिराम ।
 सोल्ह सांग की लाकरी जिन कर वेनु ललाम ॥६४॥
 ठाकुर सुंदरानन्द कों वंदहु करि बड़ि आश ।
 जिन जामुन तरु में करे कदम पुष्प परकाश ॥६५॥
 परमेश्वर ठाकुर नमों साबधान चित लाई ।
 नाम लिवाय शृंगाल जिन कीरंतन मधि लाइ ॥६६॥
 श्री पुरुषोत्तम नाम जो इष्टदेव जिय जानि ।
 वन्दों तिनके पद कमल को वरनें गुण खानि ॥६७॥
 गुण विहिन जे सबहि विधि अहें पतित निरधार ।
 सहज कृपा निज शक्ति बल तिन पें दया अपार ॥६८॥
 बरस सात मधि गात जब उनमादी हरिरूप ।
 जगमन भावन नृत्य अरु सक्ति अगाध अनूप ॥६९॥
 गाइक गौरीदास कौ हठसु गहत कच पास ।
 कीनी नित्यानन्द की अस्तुति रासि प्रकास ॥१००॥
 घोष विदित गोविंद अरु सघर गदाधरदास ।
 हरषि रहे जुग संत जहें निरखि अमित परकास ॥१०१॥
 घट अष्टोत्तर सत अघट प्रगट सुरसरी नीर ।
 जिमि अभिसेक बिसेषियै त्रिकालज्ञ सिसुधीर ॥१०२॥
 धरी मंजरी ही हरी जिहि कान निजु कनेर ।
 जलज वास जलपत भयौ मधि विदमान घनेर ॥१०३॥
 रटत नाम सुख धाम तिहि संतानि बढत हुलाम ।
 मूरति वंत प्रकास वपु प्रेम सुधारस रास ॥१०४॥
 करि भक्ति बड़ि वंदों मै कारौ कृष्ण सुदास ।
 सुत रतनाकर गुननि कर पुरुषोत्तम परकास ॥१०५॥
 धरि धीरज हिय धारि हौ दत्ता उधारन नाम ।
 संगी नित्यानन्द वर तीरथ महि अभिराम ॥१०६॥

पंडित गौरी गाइ हौं दाम विदित भरि रंग ।
 पण्डित पुरुषोत्तम नमहुँ बहुरि दास सारंग ॥१०७॥
 आचारज भागोत श्री पंडित मधु सुख साज ।
 मकर ध्वज कर गाइ हौं बहुरि मिश्र कविराज ॥१०८॥
 श्रीअनंत गोविन्द जुग आचारज निरधार ।
 पिय प्यारी की जिनि रची रुची कारी जु धमार ॥१०९॥
 सारवभौम हि वरनि हौं करि सुरगुरु पद आस ।
 प्रभु प्रकास महि जास कौ विदित कावत रस रास ॥११०॥
 सुरपति भाय जु गाय हौं रुद्र प्रताप अनूप ।
 जहें करुना कर गौर प्रभु प्रगटे पट भुज रूप ॥१११॥
 नाइ माथ जुरि हाथ पुनि बरन हुं द्विज रघुनाथ ।
 विप्रदास हरिदास द्विज वैद्य विष्णु पुन साथ ॥११२॥
 गान कला महि जास कौ प्रभु कौ बहु उल्लास ।
 द्विज हरिदास कौ बन्दों वैद्य जू विष्णुदास ॥११३॥
 खुँटिया करि परचार जग नाम कन्हाइ धीर ।
 जिहि सुत जुग अभिराम ए जगन्नाथ बलवीर ॥११४॥
 उत्कल वासी वरनि हौं सुखरासी बलराम ।
 जगन्नाथ बलराम कौ जासौं हित अति जान ॥११५॥
 जगन्नाथ सुठि दास पद रज धरि हौं निज सीस ।
 गानकला महि जास के धुनत सीस जगदीस ॥११६॥
 सिबानन्द पण्डित नमहुँ कासीस्वर गुन गाय ।
 नमहुँ चन्दनेस्वर बहुरि सिंहेस्वर उर लाय ॥११७॥
 नम काविराज श्रीनाथ हूँ प्रगट मिश्रवर दोय ।
 प्रणमहु तुलसी मिश्र अरु मँहती कासी जोय ॥११८॥
 हरीभट्ट अभिराम अरु मँहती श्री बलराम ।
 पट नाइक सुखधाम पुन बरनहुँ माधोनाम ॥११९॥

बसू वंश अति धन्य महि रातानन्द अनन्य ।
 जिहि कुलदेव सुदेव वर विदित सीरि चैन्य ॥१२०॥
 नमहुँ ब्रह्मचारी परम पुरुषोत्तम सुमहंत ।
 गुन अनन्त पुन संतवर भधु पंडित रसवन्त ॥१२१॥
 पंडित श्रीकर गाय हौं रामचन्द द्विज राय ।
 रसनिकेत कविचन्द जडु करि सुचंत हिय लाय ॥१२२॥
 संत विलासी पंडितहि नमहुँ धनञ्जय नाम ।
 दै सरवशु प्रभु पाय जिहि करवा अभिराम ॥१२३॥
 जगन्नाथ पंडित बहुरि कृष्णदास पद आस ।
 आचारज लछमन नमहुँ भक्त भूप परकास ॥१२४॥
 सो०-दास विदित जग जोय सूरज पंडित बरनि हौं ।
 प्रगट सुता जिहि दोय सुठि वशुधा अरु जान्हवी ॥१२५॥
 दो०-श्री मुरारि चैतन्य पद प्रनमहुँ भरि अहलाद ।
 चरित रास पुन जास के अचरज सम प्रहलाद ॥१२६॥
 परमानंद सुगुपत अरु जगन्नाथ वर सेन ।
 बालक राम मुकुन्द कविचंद नमहुँ रस एन ॥१२७॥
 कंसारि वल्लभ दास के सुक सैन जुग संत ।
 नमहुँ भक्त वर भासकर विसकरमा गुनवंत ॥१२८॥
 दास नाम बलराम अति कोविद रस संगीत ।
 नित्यानंद पद कमल माँहि अति पिरीति परतीति ॥१२९॥
 महेस जगदीश वन्दौ पढ़त बढ़त मन मोद ।
 पण्डित जुग माँडित सु एकम उनमाद विनोद ॥१३०॥
 प्रनम हुँ सुत नायायणी श्री वृन्दावन दास ।
 नृत्य गान अति जास कौ कीनौ जग परकाश ॥१३१॥
 बड़गाछी वासी नम हुँ कृष्णदास जन भूप ।
 नित्यानंद सरूप पद जुग जिहि जीवन रूप ॥१३२॥

उनमादी अवधूत वर प्रणम हुँ परमानन्द ।
 गंगादास पण्डित तम हुँ विदित अनादि अमन्द ॥१३३॥
 श्रीजडुनाथहि गाय हौं सीतल सील सुभाय ।
 जगन्नाथ पुरुषोत्तम महि तीरथजु पुरी नाम ॥१३४॥
 पुरी नाम रघुनाथ अरु तीरथ वर श्री राम ।
 बासुदेव तीरथ नम हुँ विष्णुभक्ति रसधाम ॥१३५॥
 बहुरि चैन हित वरनि हौं चारु चरित दिन रैन ।
 श्री उपेन्द्र आश्रम सुखद वर करुणा रस ऐन ॥१३६॥
 पुरी अनन्त हि वरनि हौं हरषि हरिहरानन्द ।
 विमल चरित कविराज अरु कुमुद नाम रसकन्द ॥१३७॥
 पण्डितवर श्री जीव अरु कृष्णदास सिसु नाम ।
 पालक नित्यानन्द जिहि तेज पुंज सुख धाम ॥१३८॥
 आचारज रसधाम पुन वरन हुँ माधो नाम ।
 अमल कुष्ण मङ्गल रचित ग्रन्थ सु जिहि अभिराम ॥१३९॥
 पण्डित गौरी अनुज श्रीकृष्णदास रस रास ।
 श्रीनृसिंह चैतन्य सुठि दास विदित हरिदास ॥१४०॥
 वरन हुँ सङ्कर घोष अति निहकिंचन निरदोष ।
 डफाहि बजावत सुवर वर कीनौ प्रभु कौ तोष ॥१४१॥
 माधौ आचारज नम हुँ जुरि जुग कर निज माथ ।
 प्रगट प्रेम बल मति विमल गङ्गादेवी नाथ ॥१४२॥
 परिहारी भारी नम हुँ नारायण जु अनूप ।
 भक्त भूप पुन चक्रवै सिवानन्द रस रूप ॥१४३॥
 अनगन गनपति जो कहूँ जुरि बैठें इक साथ ।
 एक एक के जो कहूँ प्रगटै अनगन हाथ ॥१४४॥
 हाथ हाथ में जौ कहूँ अनगन लिखन धरन्त ।
 अनगन प्रभु परिवार कौ क्यों हूँ मिलै न अन्त ॥१४५॥

अनगन प्रभु परिकर निकर जानि सबनि निज ईस ।
 ठानि दीनतर सबनि कौं इकठाँ नाथो सीस ॥१४॥
 कहे सु जे जे नाम पुन मुखियनि के भरि रङ्ग ।
 कछुक सचे क्रम सङ्ग अरु कछुक रचे क्रम भंग ॥१५॥
 जान सबनि सम महिम अरु मानि काव्य अनुरोध ।
 लघु गुरु के क्रम भंग तैं सुमति करहु जिनि क्रोध ॥१६॥
 लघु गुरु हरिबल्लभ प्रगट सम प्रभाव सुखकन्द ।
 जिम तुलसी दल सुठि विमल बहुरि गण्ड की नैद ॥१७॥
 अगतिनि के गति जगतपति करुनालय भगवान ।
 भक्त विमुख मुख निरखि पुन तुरत धरहि करकान ॥१८॥
 अघट प्रतिज्ञा सुरसुरी प्रगट करी भरि रंग ।
 हरिबल्लभ दोषी बिना तारहुँ कीट पतंग ॥१९॥
 भक्त विमुख कौ भक्त बिन नाहिन रखक कोय ।
 अम्बरीष आख्यान महि दुरवासा रिषि जोय ॥२०॥
 भक्त बड़ाई सुनत में सकृत करैं उपहास ।
 सुकृत रास को नास अरु गर्भवास कौ त्रास ॥२१॥
 भक्त बिना भगवन्त की भाक्त करहु किन टेर ।
 उवट बटोही ग्राम के क्यों हूँ ढरै न नेर ॥२२॥
 बिन हरिवल्लभ हरिकृपा चाहत अति मति मूढ़ ।
 देवकीनन्दन सो रची यौ बँदना अति गूढ़ ॥२३॥
 वृन्दावनदास मौकौ भयो प्रभु को निदेस ।
 ताकी ब्रजभाषा रची कुंज भ्रमर सुख देस ॥२४॥

इति श्रीवृन्दावनदास विरचित वैष्णववन्दना

श्रीश्रीवैष्णवाभिधानम्



प्रणम्यादौ कृपादृष्टि-पवित्रीकृत-भूतलम् ।
 सर्ववाञ्छा-कल्पतरुं गुरुं श्रीपुरुषोत्तमम् ॥
 महौजसो महाभागान् महापतित-पावनान् ।
 महाभागवतान् सर्वान् वैष्णवान् विष्णुरूपिणः ॥
 ततः शची-जगन्नाथौ ख्यातौ भूदेव-रूपिणौ ।
 श्रीविश्वरूप-श्रीविश्वम्भरयोः पितरौ शुभौ ॥
 धन्यं श्रीकृष्णचैतन्य-चन्द्रस्याग्रज-रूपिणम् ।
 शङ्करारण्य-नामानं विश्वरूप-महाशयम् ॥
 गदाधर-प्राणनाथं लक्ष्मी-विष्णुप्रिया-पतिम् ।
 साक्षात्-प्रेमकृपामूर्तिं श्रीचैतन्य-महाप्रभुम् ॥
 तथा पद्मावती-श्रीमन्मुकुन्दौ द्विज-सत्तमौ ।
 नित्यानन्द-स्वरूपस्य पितरावतुल-श्रियौ ॥
 श्रीमन्नित्यानन्द-चन्द्रं वसुधा-जाह्नवी-पतिम् ।
 श्रीवीरभद्र-जनकं सर्व-पाषण्ड-खण्डनम् ॥
 यद्यपि प्रकृति-क्षुद्रोऽबुद्धिमान् बालकः स्वयम् ।
 अनन्त-वैष्णवानन्त-महिमाख्यान-वालिशः ॥
 तथापि रसना-लौल्यादत्यन्तान्तः कुतूहलात् ।
 करोमि वैष्णवानन्ताभिधानं स्मरणं कियत् ॥
 किन्त्वत्र मम हीनस्य सर्वेष्वेतन्निवेदनम् ।
 क्रम-भङ्ग-भवा दोषा न प्राह्यास्तैर्गुणोदयैः ॥
 श्रीमाधव-पुरी श्रीलाट्टैताचार्यस्तथाच्युतः ।
 गोपीनाथः श्रीनिवासो गोविन्दश्चन्द्रशेखरः ॥



हरिदासः श्रीमुरारि-गुप्तो नारायणस्तथा ।
 मुकुन्दो वासुदेवश्च श्रीदामोदर-पण्डितः ॥
 पीताम्बरो जगन्नाथः श्रीनारायण-शङ्करौ ।
 श्रीराम-पण्डितश्चक्रवर्त्ति-नीलाम्बरस्तथा ॥
 गङ्गादासो द्विजो विष्णुः श्रीसुदर्शन-पण्डितः ।
 विद्यानिधिस्तथा बुद्धिमन्तः श्रील-सदाशिवः ॥
 श्रीगर्भः श्रीनिधिः शुक्लाम्बरः श्रीधर-पण्डितः ।
 कविचन्द्रो रामदासो वनमाली हलायुधः ॥
 विजयो नकुलाचार्य ईशानो गरुडध्वजः ।
 जगदीशः सञ्जयश्च श्रीमान् काशीश्वरस्तथा ॥
 गङ्गादामो वासुदेव-भद्रो राम-मुकुन्दको ।
 श्रीबल्लभाचार्य-वर्यो मिश्रः श्रील-सनातनः ॥
 आचार्य-वनमाली च काशीनाथ-द्विजोत्तमः ।
 ईश्वराभिधान-पुरी श्रीमत्केशव-भारती ॥
 परमानन्दाख्य-पुरी दामोदर-स्वरूपकः ।
 नरसिंहाख्यान-तीर्थो रामचन्द्र-पुरी तथा ॥
 ब्रह्मानन्द-पुरी चैव श्रीसत्यानन्द-भारती ।
 श्रीमत्सुखानन्द-पुरी श्रीगोविन्द-पुरी तथा ॥
 गरुडावधूत-देवः पुरी राघव-संज्ञकः ।
 ब्रह्मानन्द-स्वरूपश्च पुरी श्रीयुत-केशवः ॥
 श्रीमद्विष्णु-पुरी विश्वेश्वरानन्द-महाशयः ।
 श्रीमच्चिदानन्दनामाऽनुभवानन्द एव च ॥
 श्रीमत्कृष्णानन्द-पुरी नृसिंहानन्द-भारती ।
 काशीश्वराख्यान-देवोऽनुपामः श्रीसनातनः ॥
 रूपो जीवः श्रीप्रबोधानन्दः शुद्ध-सरस्वती ।
 रघुनाथ-दास-नामा तथा गोपाल-भट्टकः ॥

रघुनाथो लोकनाथः श्रीमद्भूगर्भ-नामकः ।
 राघवो जगदानन्द-पण्डितः श्रीपुरन्दरः ॥
 काशीमिश्रो राय-रामानन्दो बक्रेश्वरो द्विजः ।
 बाणीनाथ-पट्टनाथो गोविन्दानन्द एव च ॥
 सदाशिव-कविदमाभृदासवंश-गदाधरः ।
 श्रीशिवानन्द-सेनश्च श्रीमुकुन्द-भिषग्वरः ॥
 श्रीमन्नरहरिः श्रील-रघुनन्दन एव च ।
 रघुनाथ-दास-वैद्योपाध्याय-मधुसूदनौ ॥
 देवानन्द-द्विजवरः श्रीलाचार्य-पुरन्दरः ।
 श्रीयुक्ताचार्यचन्द्रश्च श्रीकृष्णदास-पण्डितः ॥
 सतीर्थ-परमानन्दः श्रीमत्-सृष्टिधरस्तथा ।
 गोविन्दो माधवो वासुदेवो घोषाभिधानभृत् ॥
 श्रील-श्रीरामदासः श्रीसुन्दरानन्द एव च ।
 श्रीपरमेश्वरः श्रीमत्-पुरुषोत्तम एव च ॥
 श्रीकृष्णदासः श्रीगौरीदासः श्रीकमलाकरः ।
 वंशीगीत-प्रकाशी श्रीवंशीवदन-दासकः ॥
 श्रीमदुद्धरण-श्रीलद्विजश्रीपुरुषोत्तमौ ।
 कविराज-मिश्रवर्यो मधुसूदन-पण्डितः ॥
 श्रीमद्भागवताचार्यो गोविन्दाचार्य एव च ।
 श्रीसार्वभौमः श्रीयुक्तो नन्दनाचार्य एव च ॥
 श्रीमत्-प्रतापरुद्रश्च रघुनाथो धरामरः ।
 हरिदास-द्विजः श्रील-सारङ्गो मकरध्वजः ॥
 श्रीबृन्दावन-दासः श्रीजगदीशाख्य-पण्डितः ।
 प्रद्युम्न-मिश्रस्तपनाचार्यः श्रीभगवांस्तथा ॥
 ओडुजः श्रीविप्रदासोऽम्बष्ठ-श्रीविष्णुदासकः ।
 वनमाली-दास-वैद्यो हरिदासो गदाधरः ॥

श्रीकृष्णदासः श्रीकाशीश्वर-पण्डितः ।
 बलराम-जगन्नाथ-दासौ श्रीचन्दनेश्वरः ॥
 सिहेश्वरः शिवानन्दो बलराम-महत्तमः ।
 सुबुद्धि-मिश्रस्तुलसी-मिश्रः श्रीनाथ-संज्ञकः ॥
 काशीनाथो हरिभट्टः पट्टनायक-माधवः ।
 रामानन्द-बसुब्रह्मचारी श्रीपुरुषोत्तमः ॥
 श्रीरामचन्द्र-भूदेवः श्रीमच्छ्रीकर-पण्डितः ।
 यदुनाथ-कविचन्द्रः पण्डितः श्रीधनञ्जयः ॥
 आचार्य-श्रीजगन्नाथः श्रीसूर्यदास-पण्डितः ।
 श्रील-श्रीलक्ष्मणाचार्यः श्रीकृष्णाचार्य एव च ॥
 चैतन्यदासः परमानन्द-गुप्त-भिषग्वरः ।
 श्रीजगन्नाथ-कंसारि-सेनौ श्रीयुक्त-भास्करः ॥
 कविचन्द्र-श्रीमुकुन्दः श्रीरामः सेन-बल्लभः ।
 श्रीयुक्त-बलरामाख्य-दासो महेश-पण्डितः ॥
 परमानन्दावधूतः श्रीगङ्गादास-पण्डितः ।
 कविराज-श्रीमुकुन्दानन्दः श्रीजीव-पण्डितः ॥
 चिरञ्जीवः कृष्णदासः कृष्णदासाख्य-बालकः ।
 यदुनाथ-दास-वर्यः श्रीकृष्णदास-पण्डितः ॥
 राम-तीर्थः कृष्ण-तीर्थः पुरी श्रीपुरुषोत्तमः ।
 श्रीमज्जगन्नाथ-तीर्थो रघुनाथ-पुरी तथा ॥
 श्रीवासुदेव-तीर्थश्च श्रीलोपेन्द्राभिधाश्रमः ।
 अनन्ताभिधान-पुरी हरिहरानन्द-भारती ॥
 श्रीमन्नृसिंहचैतन्यः श्रीमदाचार्य-माधवः ।
 शङ्करो माधवानन्दाचार्यो दास-सनातनः ।
 शिवानन्द-चक्रवर्त्ति-द्विजनारायणादयः ॥
 य एतान् स्मरति प्रातः शृणुते बापि भक्तितः ।
 कस्मिन् कालेऽपि स पुमान् यातनां नाहेति श्रुवम् ॥

एतान् संस्मृत्य संस्मृत्य यो नमस्कुरुते जनः ।
 श्रीवैष्णव-पदे तस्य नापराधः कदाचन ॥
 लभते वैष्णव-पदमेतेषां स्मृतिमात्रतः ।
 भाक्त्यै प्रेम-पीयूष-मधुरां देवदुर्लभाम् ॥
 सर्वेषामप्युपादेयः सर्ववेदाधिकस्तथा ।
 श्रवणान्नयनाच्चित्तादापि दूरो हि वैष्णवः ॥

इति श्रील-देवकीनन्दन-कविराज-विरचितं

श्रीश्रीवैष्णवाभिधानं सम्पूर्णम् ।



❀ श्रीश्रीसंक्षिप्त-वैष्णववन्दना ❀



| | |
|--------------------|-----------------|
| भज भज मन | श्रीगुरु-चरण |
| सकल वेदेर सार । | |
| पतित दुर्गते | प्रेमधन दिते |
| वन्दो श्रीचैतन्य | नित्यानन्द धन्य |
| परम करुणा यार ॥ | |
| सीतानाथ सेइ ठामे । | |
| युगल चरण | करिव वन्दन |
| गदाधर तार वामे ॥ | |
| नवद्वीपपुरी | वृन्दावन करि |
| सुरधुनीतीरे वास । | |
| सेइ त नगरे | आनन्दे विहरे |
| चैतन्येय यत दास ॥ | |

सवार चरण करिव वन्दन
 नीलाचलवासी यत ।
 संचेपे चरण करिव वन्दन
 विस्तारि बन्दिब कत ॥
 श्रीरूप सनातन करिया वन्दन
 जीव भट्ट रघुनाथ ।
 भट्ट-गोपाल-चरण करिव वन्दन
 दास-रघुनाथ-साथ ॥
 मिश्र पुरन्दर नवद्वीपे धर
 वन्दि तौहार चरण ।
 स्वरूप दामोदर चरण बन्दिब
 करिया अति यतन ॥
 श्रीवास महाशय रामानन्द राय
 बन्दना करिव आगे ।
 यौहार नाटके यत दुःख थाके
 सिहरवे करी भागे ॥
 श्रीशची ठाकुराणी चरण दुखानि
 बन्दना करिव आमि ।
 श्रीवास-धरणी अच्युत-जननी
 दुहुँ-पदे परणामि ॥
 गौराङ्ग-चरण भजे येइ जन
 तौहार चरण सेवि ।
 वैष्णव-चरण करिव वन्दन
 श्रीगुरु-चरण भावि ॥
 अनाथेर वन्धु करुणार सिन्धु
 सर्वजीवे करेन दया ।

दीन हीन जने आपनार गुणे
 प्रभु देह पद छाया ॥
 ठाकुर गौरीदास अम्बिका निवास
 बन्दना करिव तौरे ।
 बन्दों अभिराम अति बलवान्
 बंशीकाष्ठ करे धरे ॥
 बन्दों सरस्वती अति शुद्धमति
 चरण बन्दिब तौरे ।
 जानि कुल छाडि धिक् धिक् करि
 गौराङ्ग करिल सार ॥
 बन्दों नरहरि लइया गागरी
 नगरे नगरे फेरे ।
 दुःखी तापी जने आपनार गुणे
 वितरल सकरुणे ॥
 श्रीरघुनन्दन करिया कीर्त्तन
 बन्दिब तौहार पाय ।
 यौहार कीर्त्तने बाहुर दोलने
 भूलिला गौराङ्गराय ॥
 बसु रामानन्द सेन शिवानन्द
 करि चरण वन्दन ।
 कवि कर्णपूर भक्तेर सूर
 बन्दिब तौहार नन्दन ॥
 बन्दिब श्रीधर माधव शङ्कर
 प्रभुर सहित खेला ।
 बन्दों हरिदास महिमा प्रकाश
 नामे वाँधिल भेला ॥

द्विज हरिदास काञ्चन-नगरे वास
गौरप्रेमेते आनन्द ।
दुइ पुत्र यार गुणेर सागर
श्रीदास गोकुलानन्द ॥
बन्दों बासुघोष सदाइ सन्तोष
गोबिन्द याँहार भाइ ।
याँहार अङ्गने बिनोद—बन्धने
नाचे गौर निताइ ॥
चौषट्ठि महान्त चरित्र अनन्त
सकलइ ब्रजेर गोपी ।
गिरि—पुरीगण करिव बन्दन
आदि केशव भारती ॥
बन्दों दुइ भाइ जगाइ मधाइ
हरि हरि बलि नाचे ।
यारै दिया नाम गौर गुणधाम
राखिला आपन काछे ॥
गया—गङ्गा—काशी— अयोध्यादि—वासि—
गणेर बन्दना करि ।
सवार चरण करिव बन्दन
ये थाके मथुरापुरी ॥
नगर—भितरे येवा बास करे
यत वा यमुना—तीरे ।
ता सवा—चरन करिव बन्दन
धारि आमि शिरोपरे ॥
ब्रजवासी—धरे येवा बास करे
जलेर गागरी वय ।

ता सवा—चरण करिते बन्दन
मनेर उल्लास हय ॥
वृन्दावनपुरी आनन्द लहरी
बास करे यत जन ।
ता सवा—चरण करिव बन्दन
सानन्दित हये मन ॥
यत कुञ्जवासी ब्रजेते निवासी
सबार बन्दना करि ।
संक्षेपे चरण करिव बन्दन
विस्तारि बन्दिते नारि ॥
मधुवने हय तालवने रय
कुमुदवने यार घर ।
बहुला—निवासी यत ब्रजवासी
सवे मोरे दया कर ॥
श्रीकुण्डनिवासी श्यामकुण्डवासी
गोबर्द्धनवासी यत ।
एकत्र करिया करिव बन्दन
विस्तारि बर्णिव कत ॥
दिधी काम्यवने थाके यत जने
सबार चरण धरि ।
वृषभानुपुरे आर नन्दीश्वरे
सकलेर बन्दना करि ॥
यावट—निकटे किशोरीर वटे
बास करे यत जन ।
कोकिलवन—वासी वैठल—निवासी
करि चरण बन्दन ॥

पदचिह्न—स्थाने रासलीला स्थाने
 दहि ग्रामे यत जन ।
 कोटिवन—वासी शेषशायी—निवासी
 करि चरण बन्दन ॥
 ब्रज वृन्दावने मण्डली—बन्धने
 तिन शत चौषट्टि ग्राम ।
 मुञ्जि मूढमति कि आछे शक्ति
 प्रतक्ये लइते नाम ॥
 रामघाट—तटे आर अक्षय—बटे
 नन्दघाटे यत जन ।
 भद्रवन—बासी भाण्डीर—निवासी
 करि चरण बन्दन ॥
 वेलबने घर मान सरोवर
 लौहबने यार घर ।
 बलदेव—बासी यत ब्रजवासी
 सवे मोरे दया कर ॥
 राओले गोकुले यमुनार कुले
 बने उपबने यत ।
 संचेपे चरण करिव बन्दन
 एइ मोर अभिमत ॥
 नन्दीश्वरे गया रामकृष्ण देखिया
 आनन्दे हइल भोर ।
 खेलनबने गया यमुना देखिया
 मन फिरि गेल मोर ॥
 हेचड़ी खेचरी पेटका पिछुड़ी
 मिलि ग्रामे यत जन ।

दहेगा—पहेगा— भहेगा—निवासी
 करि चरण बन्दन ॥
 वैष्णव—बन्दन ये करे पठन
 येवा करये कीर्तन ।
 अविलम्बे तारे अवश्य मिलये
 श्रीकृष्णप्रेम—रतन ॥
 देवकीनन्दन करिव बन्दन
 आमा हते नाहि हय ।
 दन्ते तृण धरि निवेदन करि
 द्विज हरिदासे कय ॥
 वैष्णव—बन्दन प्राते येइ जन
 येवा पड़य शुनय ।
 वृन्दावन याय कुञ्जसेवा पाय
 नाहिक शमन भय ॥

इति श्रीश्रीसंक्षिप्त-वैष्णवबन्दना समाप्ता ।



॥ श्री राधारमणो जयति ॥

अथ भक्त सुमिरनी लिख्यते

॥ चौपाई ॥

सुमिरौ श्री मन-हरण अनूप । महाप्रभु चैतन्य सरूप ॥१॥
श्री नारायण-दास बखानी । भक्तमाल अति ही रस सानी ॥
आज्ञा दी श्री राधा-रमण । भक्त जु नाम मात्र रस श्रवण ॥
भक्त-माल रतन की माल । कंठ करन हित रची रसाल ॥
कंठ किये माला मन हरणी । सुधि आवत यों भक्त सुमिरिनी ॥
प्रथम भक्त भक्ति गुरु ईस । सुमिरि चरण मधि राखौ सीस ॥
मीन वराह कमठ अरु वामन । परसुराम रघुनाथ जु पावन ॥
श्री-नरसिंह सुमिरि सुखदाई । भक्त प्रह्लाद अति रति माई ॥
बुध कलकी श्रीकृष्ण अरु व्यास । पृथु हरि हंस मन्वंतर बास ॥
यज्ञ ऋषभ हयग्राव धन्वन्तर । बद्रीपति दत्ता कपिल जु ध्रुववर ॥
सनकादिक चौबीसौतार । भक्त इष्ट गाये सुख सार ॥
चिन्ह शंख चक्रादिक जान । प्रभु पद पंकज कर नित ध्यान ॥
विधि नारद शंकर सनकादि । कपिल स्वयंभू जनक प्रह्लादि ॥
बलि भीषम शुक धर्म सरूप । अजामिल प्रभु कृपा अनूप ॥
विष्वक्सेन जै विजै प्रवल बल । नन्द सुनन्द सुभद्र भद्र भल ॥
चण्ड प्रचण्ड विनीत पुनीत । कुमुद कुमुदाक्ष रु सील सुरीत ॥
श्रीसुशील सुसेन पारिषद । सब भक्तान में भक्ति महा हद ॥
कमला गरुड हनुमान जामवन्त । सुग्रीव विभीषन सबरी खगपति ॥
ध्रुव उद्धव अक्रूर विदुरवर । अम्बरीष सुदाम ग्राह गज-सुन्दर ॥
पाण्डव चन्द्रहास चित्रकेत । मैत्रे कुन्ती बधू समेत ॥
जोगेश्वर श्रुतदेव मुचकन्द । अंग प्रियव्रत पृथु जग चन्द ॥२॥

४७)

साधक-कण्ठभूषण

सेस सूत सौनक परचेता । सतरूपात्रै सुता सुचेता ॥२॥
सुमर परीक्षित सुमति मदालस । यज्ञपतिनी ब्रजनारि निरालस ॥
प्राचीन-बरहि सतव्रत भागीरथ । सगर रघुगन हरिचन्द हरिपथ ॥
बालमीक मिथिलेस सुजानि । भरथ दधीचि रुक्मांगद जान ॥
सुरथ सुधन्वा सिबिरु विध्याबलि । नील मोरध्वज ताम्र रसाल ॥
अलरक रिभु इक्ष्वाक रु ऐल । सुचि सतधन्वा गाध रघु सैल ॥
रंतिदेव अमूरति नहुष उतरंग । भूरि देवल वैबस्वत मनु अंग ॥
जजाति दिलीप पूर यदुराय । मानधाता ग्रह निमि समुदाय ॥
पिप्पल भरद्वाज सरभंग । संजय दक्ष समीक सुरंग ॥
उत्तानपाद अरु जाग्यवल्क-ऋषि । सुमिरि निरंतर यहै परमसिसि ॥
कवि हरि करभाजन रु सुवि । अंतरिक्ष अरु चमस प्रबुधि ॥
आविर होत्र अरु द्रमिल प्रसिद्ध । पिप्पल आदि ए सब हि सिद्ध ॥
अगस्त्यपुलस्त्यपुलहसौरभऋषि । चिमनवशिष्टकर्मसुव्याससिषि ॥
अत्रि ऋचीक गर्ग गौतम सूचि । लोमस भृगु दालभ्य परम रुचि ॥
विश्वामित्र माण्डव दुर्बासा । बहुसिख भृंगी श्रीअंगीरामा ॥
जामदग्नि जाबल्य मयादस । पारासर कश्यप परवत रस ॥
स्मृति अठारह और पुरान । इनके करता रस की खान ॥
जयन्त सिष्ट विजयी अनिचार । सुराष्ट्रराष्ट्र बर्द्धन रस सार ॥
अशोक धर्म-पालक ततुवेता । मंत्री बयें सुमन्त सुचेता ॥
अंगद सुग्रीव दधिमुख जानो । दुविद मयंद उल्का पहिचानो ॥
सुसेन दधीमुख कुमुद नील नल । सरभा गवैगवाक्ष सु अतिबल ॥
पनस गन्ध मादन बांदरबार । पदम अठारह यूथप सुन्दर ॥
गोप प्रजन्य सुतनय नन्द जानौ । धरानन्द ध्रुव-नन्द बखानौ ॥
श्रीउपनन्द अभिनन्द सुनागर । नन्द सुनन्द अधिक सुखसागर ॥
करमा धरमा नन्द अभिनन्दन । करत निरंतर सब जग वन्दन ॥
महरि जसोदा कीरती-रानी । श्रीवृषभानु-कुंवरि रससानी ॥४॥

श्री ललितादि सहचरी वृंद । सखा सूबाहु सुबल सुखकन्द ॥४८॥
 मधु-मंगल भोज अजुर्न श्रीदामा । मित्र अनंक गनै को नामा ॥
 रत्नक पत्रक पत्री दास । मधु-कंठ मधुवर्त प्रकाश ॥
 रसाल विसाल प्रेमकन्द प्राण । चन्द्रहास मकरंद रस दान ॥
 पयद बकुल सब सेवा भीजे । नन्द-कुंबर जिन पर अति रीके ॥
 सप्त दीप में जे हरिदास । ते मो पर करौ कृपा प्रकाश ॥४९॥
 मध्य दीप नब खण्ड बखान । सेबक सेव्य सब ही रसखान ॥
 स्वेत दीप अनुरागी भक्त । पलक परै सु भूल गयो जक्त ॥
 पदम संकु इला पत्र जु सर्प । बासुकि अजित असु कमल सुअर्प ॥
 तक्षक कर कोटक हरि प्यारे । श्री-अनन्त प्रभु नाम उचारे ॥
 आरस भक्त इते सब भये । अब सुमिरौ जे कलि में नये ॥
 रामानुज अरु मध्वाचारज । विष्णुस्वामि निबादित आरज ॥
 बिष्वक्सेन षटकोप मंगल मुनि । बोपदेव श्रीनाथ जगत धनि ॥
 पुण्डरीकाक्ष परांकुशध्याय । राममिश्र जामुन मुनि गाय ॥
 श्रुति-प्रज्ञ श्रुतिदेव बिदांबर । श्रुतिधामा श्रुति-उदाध जु सुन्दर ॥
 लाला-चारज श्री-गुरुनिष्ठ । देवाचारज महा वरिष्ठ ॥
 हरियानन्द राघवानन्द । जिनके प्रगटे रामानन्द ॥
 भावानन्द नरहरि पदमावत । अनन्तानन्द हरि गुन गावत ॥
 जोगानन्द गयेस करमचन्द । रामदास श्रीरंग सदानन्द ॥
 कृष्णदास पैहारी नरहरि । भज दिन रैन और सब परि हरि ॥
 मेहा हठी नरायन सूरज । पुरषा पृथु तपूर भक्ती सज ॥
 टीला पदम नाम गोपाल । देवा हेम कल्याण रसाल ॥
 गदाधारी गंगा नारीवर । विष्णुदास कान्हर चांदन कर ॥
 बाइस बीरी रंगा नाम । कोल्ह सुमेरु देव अभिराम ॥
 अगरदास श्री-संकराचारज । नामदेव जयदेव जु आरज ॥
 श्रीधर बिल-मंगल मंगलतन । ज्ञानदेव श्री-विष्णुपुरी धन ॥५०॥

श्री-तिलोचन वल्लभा-चारज । भक्तदास भक्त सुख कारज ॥५१॥
 नरसिंह रूप है तन मन भये । पुनि दसरथ है तन तजि गये ॥
 बांधे सुने कृष्ण जब दाम । प्राण तजे ताही छिन भाम ॥
 महा प्रसाद अबज्ञा जान । राजा निपुन कटायो पाणि ॥
 करमा सिल-पिल्ले की भक्त । हरि रस मगन भूलि गई जक्त ॥
 भक्तन हित सुत गरल पिबायो । सो जस पात पात में छायो ॥
 रंगनाथ को सदन बनायो । जैन धर्म रचि तन विसरायो ॥
 हंस बंधे वाने की लाज । हरि रक्षा करि सारे काज ॥
 सुत अपनो जब हरि जन मार्यो । कन्या दई अपनपौ बार्यो ॥
 कामधुज देवा भुवन चौहान । जैमल ग्वाल श्रीधर पहिचान ॥
 निसकिचन हरिपाल सुहायो । विप्र भक्त हित साखि बुलायो ॥
 रामदास के सदन सिधारे । जसु स्वामी के वृषभ संभारे ॥
 बार-मुखी रु अल्ह नन्ददास । बीच राम दै कारि विस्वास ॥
 माला तिलक निष्ठ इक दास । अन्तर निष्ठ महा सुख रास ॥
 गुरु-निष्ठा में परम प्रवीन । श्रीरैदास भक्त रस लीन ॥
 श्रीकबीर ओ पोपा भृत्य । धना सैन सांचे हरि कृत्य ॥
 सुखानन्द रु सुरसुरानन्द । नारी सुरसरि अति सुख कंद ॥
 श्री-नरहरियानन्द सुधीर । पदम-नाभ दै मेटी भीर ॥
 तत्वा जीवा दक्षिण देश । माधौ-दास हरि भक्ति अशेष ॥
 श्रीरघुनाथ-गुसाई नाम । सुमिरौ जो चाहत हौ स्याम ॥
 भजि लै श्री नित्यानन्द राम । उर आवत वृन्दावन धाम ॥
 महा-प्रभू श्री कृष्ण-चैतन्य । कलि अबतार कियो जग धन्य ॥
 सूरदास सागर गुन आगर । परमानन्द अति रसिक उजागर ॥
 कैसौभट्ट श्रीभट्ट सु साधु । श्रीहरिव्यास सब रस अगाधु ॥
 सुमिरि दिबाकर बीठल नाथ । श्रीगिरिधर गोविन्द जु साथ ॥
 बाल-कृष्ण श्रीगोकुलनाथ । श्री रघुनाथ ओ जदुनाथ ॥५०॥

श्रीघनश्याम पगे कृष्णदास । वद्धमान गंगल रस-रास ॥१००॥
 भीषम रामराय परताप । चैम-गुसाई मेख्यो ताप ॥
 बिठलदास माथुर अभिराम । हरी-राम कमलाकर नाम ॥
 श्रीनारायण-भट्ट प्रवीन । बल्लभ रास रस अति ही लीन ॥
 रूप सनातन रस आचारज । हूँ करि प्रगट किये रस कारज ॥
 श्रीहरिवंस गुसाई भजौ । कुञ्ज केलि रसही में सजौ ॥
 श्रीस्वामी हरि-दास रसीले । जिनके उर में जुगल छवीले ॥
 श्रीमत व्यास रस-रास-रसिक वर । हरि के दास किये सर्वोपरि ॥
 श्रीमत जीव-गुसाई धीर । रस-सागर उर अति गंभीर ॥
 श्री-गोपाल-भट्ट गोस्वामि । राधा-रमण प्रगट अभिराम ॥
 ऋषीकेश भगवान सुनागर । बीठल विपुल महा रस सागर ॥
 लोकनाथ जगन्नाथ महाशय । मधु गुसाई अति स्वच्छ आसय ॥
 कृष्णदास गोविंद अधिकारी । दूजे मदन-मोहन उर प्यारी ॥
 श्रीरंग घमंडी जुगल-किशोर । श्रीभूगर्भ रु सुरस हिल्लोर ॥
 श्यामानन्द श्री-रसिकानन्द । जिन सुमरे उपजत आनन्द ॥
 श्रीहरिनाभ तिलोचन धीर । सोभा सीवा आधार गम्भीर ॥
 आसाधर धौराज विचित्र । सधना नीर पदारथ चित्र ॥
 श्रीकाशेश्वर परम-रसाल । लाड लडाये गोविंदलाल ॥
 कृष्णदास कट हरिया डूंगर । सोभू ऊदा राम नाम वर ॥
 विमलानन्द पदम सुखरास । रामदास जग मेख्यो त्रास ॥
 सबल जती राम सन्त सीही । खोजी श्याम मनोरथ जीही ॥
 दूल्हा पदम रांकां झोगू जप । चाचा गुरु सबाई हरि तप ॥
 जाडा चांदा नापा माली । कीता चतुर प्रभु रति प्रति पाली ॥
 लल्लिमन लफरा लडू जु सन्त । सूरिज कुम्भनदास महंत ॥
 खेम विमानी विरही भरत । भावन नफर हरिदास सुचरित ॥
 चक्रपानि हरिकेस लुटेरा । तिलोक पुखरदी हरि कियो नेरा ॥२५॥

उद्धव विजुरी वन चर वंस । सोम भीम महारा पर संस ॥२६॥
 सोमनाथ भजि बिको विसाखा । लखध्याना मुकुन्द अभिलाखा ॥
 बालमीक रघु वृद्ध व्यास । गनेस त्रिविक्रम अति सुख रास ॥
 भांभू जगन बिठल आचारज । हरिभू राधौ अति ही आरज ॥
 लाला लाखा श्री हरिदास । छीतर उद्धव कियो प्रकाश ॥
 घाटम घूरी और कपूर । देवानन्द खेम रस पूर ॥
 श्रीमुकुन्द नर-हरियानन्द । संतराम अति ही आनन्द ॥
 विष्णु मही पति वीदा गांडन । वाजू सुत छीत माधौ जन ॥
 श्रीरंग द्वारकादास दामोदर । रूपा नरहरि कान्हर सुन्दर ॥
 केसव श्रीभगवान प्रयाग । नागु सुत गोपाल सराग ॥
 केशव पुनि हरिनाथ भीम भजि । ब्रह्मचारी गोविन्द भक्ति सजि ॥
 खेता पंडा सु गोपीनाथ । श्रीमुकुन्द गजपति गुण गाथ ॥
 बालकृष्ण बड़ भरथ गुपाल । उर राजत हरि रसिक रसाल ॥
 अच्युत विद्यापति ब्रह्मदास । सुमति बहोरण गोविंद आस ॥
 चतुर बिहारी गंगाराम । लाल वरसानियां अभिराम ॥
 केशौ नंद सुवन की छाप । परसराम मेटत सब ताप ॥
 पियदयाल पूरन नृप भीषम । जनदयाल श्रीआस करन सम ॥
 श्रीरघुनाथ अरु गोपीनाथ । रामभद्र बीठल रघुनाथ ॥
 गुंजा-माली दासू स्वामी । श्री चित्तुमर हठ निह-कामी ॥
 उत्तम जदुनंदन गोविन्द । मुरली सोती रामानंद ॥
 हरिदास मिश्र भगवान मुकुंद । केशौ दंडौती आनंद ॥
 बिष्णुदास बेनीजु चतुर-भुज । सीता भाली सुमिर मिटै रुज ॥
 प्रभुता कुवरि उमा भठियानी । सोभा श्री-गणेश देरानी ॥
 गंगा गौरी गोपाली कृत । कला लखा सति भामा अति मति ॥
 मानमती सुचि गढो सुदेस । जमुन कोली भक्ति प्रवेश ॥
 रमा मृगा देवा जुग जेबा । केकी कमला भक्तनि सेवा ॥२७॥

हीरा हरि चेरी सु देवकी । ए जुबती नहि काहू सकी ॥५२॥
 नर बाहन जापू बीदावत । धारा अनुभई ऊदारावत ॥
 जयंत रूप अजुन गोविन्द । श्री-जनार्दन हेम सुखंद ॥
 गदा दमोदर ईश्वर गावै । श्री सापिले मयानंद भावै ॥
 तुलसीदास जटिया ते भाऊ । दास सु मोहन बारी दाऊ ॥
 वनिथा राम लछमन भगवान । श्रीजगदीशदास मति मान ॥
 उभै गुपाल लाल पनधारी । श्री नरसी कीरति विस्तारी ॥
 श्रीदिवदास जमोध वर वंस । नंददास सो जग पर-संस ॥
 जन-गोपाल माधौ विसबास । अंगद को हीरा परकास ॥
 नृपति चतुर-भुज मीराबाई । जिनकी कीरति रसिकनि गाई ॥
 पृथीराज राजा बड़ भाग । रामचंद्र नीवां रस भाग ॥
 अमै-राम वीरम सुरतान । ईश्वर अखैराज भगवान ॥
 राय-मल्ल मधुकर करमसी । कान्हार नृप जस राजत ससी ॥
 श्री-खैमाल रतन राठौर । जाको कुल सब जग सिर मौर ॥
 राम नृपति राजा तिन धरनी । बड़ी उदार संत मन हरनी ॥
 श्रीकिशोर संतनि के संमत । हरिदास हरि सों गति मति रति ॥
 श्रीचतुरभुज रसिक सुजान । कृष्णदास जाड़ा गुण गान ॥
 श्रीप्रबोध रसराम रसिक बस । ज्याये जिय दै प्रेम सुधा रस ॥
 श्रीप्रबोध विमलानंद संत । भक्त भागवत गुन नहि अंत ॥
 सूरदास रस कथा अनंत । मदनमोहन जिहि छाप लसंत ॥
 श्रीकात्यायनि तिय रंग मंगी । श्रीकमुरारि कीरति जग-मंगी ॥
 श्रीमत तुलसीदास अनन्य । मानदास जग में अति धन्य ॥
 सुमिरौ श्री बनबारी स्याम । श्रीनारायण-मिश्र अभिराम ॥
 राधौ श्री हरिदास बावनो । परसराम गुन निसि दिन गनो ॥
 भट्ट-गदाधर परम रसज्ञ । चौमुख चौर सब सरवज्ञ ॥
 चंड जगत ईश्वर अरु कोल्ह । साधु अलूको दाख्यो बोल ॥७७॥

माधौ करमानन्द सु मांडन । जीवानंद रहे तन मन हरि सन ॥७८॥
 नारायण दास सु चारन । पृथीराज नृप कुल निस तारन ॥
 कावां पति सीवा मुखदाई । रतनावती सु कीरति गाई ॥
 जगन्नाथ श्री-मथुरादास । नृतक-नारायण दान प्रकास ॥
 राधाकृष्ण नाम जा के मुख । नाथ भक्ति ताके उर बहु सुख ॥
 बोहिथ राम गोपाल कुँवर बर । गोविंदमाडिल छीतस्वामि पर ॥
 श्रीजसवंत गदाधर कान्हार । श्रीअनंतानंद नारद उर धर ॥
 दीनदास जु स्याम हरि नाम । बछ पातल गोसू हरि लाम ॥
 रामदास भगवान विहारी । कृष्ण जीवन जीवन उर धारी ॥
 श्यामदास श्री हरि नारायण । उद्धवराम रैन जस गायण ॥
 परसराम गंगा किकर हरि । कृष्ण दास कूंडा जू उरधरि ॥
 कृष्णदास गोपानंद खेम । सोढ़ा जै देव राधौ नेम ॥
 विदुर दयाल दमोदर मोहन । श्री परमानंद उद्धव सोहन ॥
 चतुरदास नागा रंग मगे । गोमां परमानंद जग मगे ॥
 प्रधान द्वारका मथुरा खोरा । बीठल श्री भगवान कौ जोरा ॥
 चीधर श्याम जु खेम गोपाल । संतन सौं करी रति प्रतिपाल ॥
 केवल कूबा सेवा साध । श्री प्रयाग जंगी आराध ॥
 पूरण बनबारी भगवान । जगत विनोदी नरसिंह जान ॥
 श्री किशोर जगन्नाथ दिवाकर । खीची हेम भक्ति की आकर ॥
 सुमति सलूवौ उद्धव संग । श्री परमानंद हरि रस रंग ॥
 त्योला हेम भजन सुख सागर । केशौ जोगी दास उजागर ॥
 हरीदास कान्हार रति रासी । भगवान नीवा खेता सी ॥
 श्री जसवंत भीम जैमाल । विष्णुदास हरिदास गोपाल ॥
 नाथ भट्ट बृज रस पारायण । करमैती हित रसिक रसायण ॥
 खरगसेन श्री गंग सुग्वाल । बृज रस गायो करे निहाल ॥
 श्री मत लालदास सुदिवाकर । माधौ ग्वाल महा रस आकर ॥३॥

राघौ रसिक प्रेम निधि घन्य । हरि नारायण नृपति अनन्य ॥४॥
 उद्धव पदम सुविन्य कल्याण । बोहिथ रामदास सुख खान ॥
 श्री परमानंद तुलसीदास । दयाराम बाई रति रास ॥
 वीरा हीरामणि नीरा तिय । लाली लड़ा गोमती अति प्रिय ॥
 जुग पार्वती औ केसी सेव । जेवा हरषां भजि हरिहेव ॥
 बादर रानी भक्त उपासन । श्री गंगा जमुना रैदासिनि ॥
 कुवरि राय कीरति विस्तार । कान्हर दास लहो रस भार ॥
 परमा केशव नाम लुटेरा । केवल राम जग भरम निवेरी ॥
 श्री हरिबंस विरक्त प्रवीन । श्री कल्याण रस में नित लीन ॥
 काहक वीठलदास सदानंद । श्री रंग स्यामदास आनंद कंद ॥
 लाखो मारु मुदित कल्याण । बंशी परस नारायण गान ॥
 संकर चेता गगल गोपाल । लीला गाई रसिक रसाल ॥
 कृष्णदास हरिदास धुरंधर । चित्त सुख तीरथ राम दामोदर ॥
 नरसिंहारण्य सु कीनी भक्ति । श्री मधुसूदन माधौ हरि रति ॥
 श्री प्रबोधानंद रंगीन । गाइ कुंजकेलि रसिक प्रवीन ॥
 और संत प्रिया रंग भीन । श्री जगदानंद अति रस लीन ॥
 रामभद्र हरि भजन विलास । पूरण और द्वारिकादास ॥
 लछिमन भट्ट हरि परम धर्म पर । कृष्णदास करनी सर्वोपर ॥
 अति रस विप्रन गदाधरदास । श्री नारायण दास सुवास ॥
 श्री भगवानदास सरसाई । श्री कल्याण अतिसै सुखदाई ॥
 संतदास श्री माधौदास । श्री कान्हर जग भक्ति प्रकाश ॥
 लेखक गोविन्ददास रसाल । जा उर राजी भक्ति सुमाल ॥
 जगतसिंह नारायण इष्ट । गिरधर ग्वाल कबीर सुवृष्ट ॥
 गोपाली हरि भक्त लड़ाये । रामदास नीके गुन गाये ॥
 रामराय कामादिक टारे । श्री भगवन्त मुदित अति प्यारे ॥
 लालमती बाई सुखदाई । वृन्दावन वसि रति निधि पाई ॥३०॥

ये सब भक्त नाम सुठि गाये । रसमय ताते मो मन भाये ॥
 श्रीमत राधा रमण पुजारी । आज्ञा दी सो मैं उरधारी ॥
 भक्त नाम सुमिरनी कीनी । पढ़त सुनत अति ही रस भीनी ॥
 प्रात पढ़े भक्तन के नाम । तौ उर झलकै स्यामा स्याम ॥
 भक्त सुमिरनि सुमरन करै । प्रियादास तिन पद रज धरै ॥
 ॥ इति श्रीरसिकराज श्रीप्रियादासजू कृत भक्तसुमिरनी सम्पूर्ण ॥

श्रीश्री वैष्णवशरण ।

वृन्दावनबासी यत वैष्णवेर गण ।
 प्रथमे बन्दना करि सबार चरण ॥
 नीलाचलवासी यत महाप्रभुर गण ।
 भूमिते पड़िया बन्दों सबार चरण ॥
 नवद्वीपबासी यत महाप्रभुर भक्त ।
 सबार चरण बन्दों हज्जा अनुरक्त ॥
 महाप्रभुर भक्त यत गौड़देशे स्थिति ।
 सबार चरण बन्दों करिया प्रणति ॥
 ये देशे ये देशे वैसे गौराङ्गेर गण ।
 उर्ध्वबाहु करि बन्दों सबार चरण ॥
 हज्जाछेन हवेन प्रभुर यत दास ।
 सबार चरण बन्दों दन्ते करि घास ॥
 ब्रह्माण्ड तारिते शक्ति धरे जने जने ।
 ए वेद पुराणे गुण गाय येबा शुने ।
 महाप्रभुर गण सब पतित—पावन ।
 ताइ लोभे मुज्जि पापी लइनु शरण ॥
 बन्दना करिते मुज्जि कत शक्ति धरि ।
 तमोबुद्धि-दोषे मुज्जि दम्भ मात्र करि ॥

तथापि मूकेर भाग्य मनेर उल्लास ।
 दोष क्षमि मो अधमे कर निज—दास ॥
 सबवेबाञ्छा—सिद्धि हय यमबन्ध छूटे ।
 जगते दुर्लभ हवा प्रेमधन लुटे ॥
 मनेर बासना पूर्ण अचिराते हय ।
 देवकीनन्दन दास एइ लोभे कय ॥ १ ॥

इति श्रील देवकीनन्दन-दास-विरचित श्रीश्री वैष्णवशरण समाप्त ।

श्रीश्रीगौरगणोद्देश ।

गौरगण ।

स्वरूपनिर्णय ।

उपेन्द्रमिश्र (महाप्रभु के पितामह) ... पर्जन्य (श्रीकृष्ण के पितामह)
 नीलाम्बरचक्रवर्ती (मातामह) ... गर्गमुनि और सुमुख (मातामह)
 जगन्नाथमिश्र (पिता) ... नन्द (श्रीकृष्ण के पिता) ।
 शचीदेवी (माता) ... यशोदा (माता) ।
 ईश्वरपुरी (दीक्षागुरु) ... सान्दीपनिमुनि ।
 केशवभारती (सन्यास गुरु) ... अक्रूर ।
 गङ्गादासपरिणित (विद्यागुरु) ... बशिष्ठ ।
 मुकुन्द वा हाडाई परिणित } (नित्यानन्द के पिता) वसुदेव (रामकृष्ण के पिता)
 पद्मावती (माता) ... रोहिणी (बलराम की माता)
 बलभाचार्य (लक्ष्मीदेवी के पिता) ... भीष्मक (रुक्मिणी के पिता)
 सनातनमिश्र (विष्णुप्रिया के पिता) ... सत्राजितराजा (सत्यभामा के पिता)
 वनमाली (लक्ष्मी का विवाह घटक) ... विश्वामित्र ऋषि ।
 काशीनाथ (विष्णुप्रिया वि. घटक) कुलक (सत्यभामा के विवाह घटक)
 पुण्डरीकविद्यानिधि ... वृषभानुराजा ।

गौरगण ।

स्वरूपनिर्णय ।

सूर्यदास (वसुधा तथा जाह्नवा के पिता) ... ककुब्धि (रेवती के पिता) ।

नित्यानन्दप्रभु ... बलराम ।
 वसुधा (नित्यानन्द की पत्नी) ... वारुणी (बलराम की पत्नी) ।
 जाह्नवा (" ") ... अनङ्गमञ्जरी तथा रेवती ।
 वीरचन्द्र (नित्यानन्दप्रभु के पुत्र) ... पयोब्धिशायी ।
 गङ्गा (" की कन्या) ... गङ्गा (विष्णुपादोद्भवा) ।
 माधवाचार्य (गङ्गा के स्वामी) ... शान्तनुराजा (गङ्गास्वामी) ।
 मोनकेतन रामदास ... सङ्कर्षण के आदिव्यूह ।
 श्रीअद्वैताचार्य ... सदाशिव ।

सीतादेवी (श्रीअद्वैत की पत्नी) ... योगमाया-भगवती ।
 नन्दिनी (सीता की दासी) ... जया (भगवती की दासी) ।
 जङ्गली (" ") ... विजया (" ") ।
 अच्युतानन्द (अद्वैतप्रभु के पुत्र) ... अच्युता गोपी ।
 कृष्णमिश्र (" ") ... कार्तिकेय ।
 श्रीगदाधर परिणित ... श्रीराधारानी ।
 श्रीवास परिणित ... श्रीनारद ।

मालिनी (श्रीवास की पत्नी) ... अम्बिका (श्रीकृष्ण की धात्रीमाता) ।
 नारायणी (" भ्रातृकन्या) ... किलिम्बिका ।
 लक्ष्मीप्रिया (महाप्रभु की पत्नी) ... रुक्मिणी (श्रीकृष्ण की पत्नी) ।
 विष्णुप्रिया (" दूसरी पत्नी) ... सत्यभामा " ") ।
 नरहरि सरकारठाकुर ... मधुमती ।
 रघुनन्दन (खण्डवासी) ... प्रद्युम्न ।
 वक्रेश्वरपरिणित ... अनिरुद्ध ।

स्वरूपनिर्णय ।

गौरगण ।

| | |
|----------------------------------|--|
| गदाधरदास | ... पूरानिन्दा (बलरामप्रिया गोपी) । |
| गोपीनाथाचार्य | ... ब्रह्मा । |
| मुरारिगुप्त | ... हनुमान् । |
| पुरन्दर पण्डित | ... अङ्गद । |
| गोविन्दानन्द | ... सुग्रीव । |
| रामचन्द्रपुरी | ... विभीषण और जटिला । |
| हरिदास ठाकुर | ... प्रह्लाद और ऋचिक मुनि के पुत्र ब्रह्मा । |
| देवानन्द पण्डित (कुलियानिवासो) | ... भागुरीमुनि । |
| वृन्दावन दास | ... वेदव्यास । |
| वल्लभभट्ट | ... शुकदेव । |
| चन्द्रशेखर सरखेल | ... चन्द्र । |
| विश्वेश्वराचार्य | ... सूर्य । |
| वनमाली भिक्षुक | ... सुदामा विप्र । |
| शुक्लाम्बर ब्रह्मचारी | ... प्रधाना यज्ञपत्नी । |
| जगन्नाथाचार्य | ... दुर्वासा । |
| जगन्नाथ (जगाइ) | ... जय (वैकुण्ठ के द्वारपाल) । |
| माधव (माधाइ) | ... विजय (" ") । |
| गरुड़ पण्डित | ... गरुड़ (विष्णुवाहन) । |
| प्रतापरुद्र | ... इन्द्रद्युम्न । |
| परमानन्दपुरी | ... उद्धव । |
| सार्वभौम भट्टाचार्य | ... बृहस्पति (देवगुरु) । |
| भास्कर ठाकुर | ... विश्वकर्मा । |
| काशीश्वर (महाप्रभुभृत्य) | ... भृङ्गार (श्रीकृष्णभृत्य) । |
| गोविन्द | ... भङ्गुर (" ") |

गौरगण

स्वरूपनिर्णय ।

| | |
|---------------------------------|--|
| हरिदास (महाप्रभुभृत्य) | ... रक्तक (कृष्णभृत्य) |
| वृहच्छिशु | ... पत्रक (" ") |
| रामदास | ... पयोद (ब्रज में जलसंस्कारकारी) । |
| नन्दास | ... वारिद (" ") |
| ईशान दास | ... शाण्डिल्यमुनि । |
| गौरोदास कीर्त्तनीया | ... कलकण्ठी (ब्रज में गायक) । |
| वनमाली पण्डित | ... मालाधर (ब्रज में वेणु तथा मुरलोधारक) । |
| लोकनाथ | ... सनक । |
| श्रीनाथ | ... सनातन । |
| रामनाथ | ... सनत्कुमार । |
| काशोनाथ | ... सनन्दन । |
| रायभवानन्द | ... पाण्डुमहाराज । |
| वाणीनाथ (भवानन्द के पुत्र) | ... युधिष्ठिर । |
| कलानिधि | ... भीम । |
| राय रामानन्द | { ... अर्जुन तथा अर्जुनोयागोरी । |
| | { विशाखा (मतान्तर में) । |
| सुधानिधि | ... नकुल । |
| गोपीनाथ | —सहदेव । |
| सेन शिवानन्द | —वित्रा (मतान्तर में वीरादूत) । |
| मालती (शिवानन्द की पत्नी) | —विन्दुमती । |
| चैतन्यदास (शिवानन्द के पुत्र) | —दक्ष (ब्रज में शुकपक्षी) । |
| रामदास | —विचक्षण (" ") । |

स्वरूपनिर्याय ।

गौरगण ।

कविकर्णपूर

(शिवानन्द के पुत्र)

- मधुरेक्षणा (मतान्तर में गुणचूड़ासखी)
- तथा सूक्ष्मधी (ब्रज की सारी) ।

सत्यानन्द सरस्वती

श्रीकान्त सेन

उद्धवदास

वंशीदास ठाकुर

जगदानन्द परिणित

कृष्णदास कविराजगोस्वामी

सारङ्गठाकुर

सत्यराजखान

मुकुन्द (खण्डवासी)

भगवानाचार्य

द्विजहरिदास

वाणीनाथपरिणित

नवाइ होड़

कृष्णदास सरखेल

विहारी कृष्णदास

होड़हरिदास

श्रीनाथ परिणित

गालिम जगन्नाथ

पुरुषोत्तम ब्रह्मचासे

प्रद्युम्न मिश्र

गोपालगुरु

—गौतम ।

—कात्यायनी ठाकुरानी ।

—पद्मा ।

—श्रीकृष्ण की वंशी ।

—सत्यभामाप्रकाशविशेष ।

—कस्तूरीमञ्जरी ।

—नान्दीमुखी ।

—सुकण्ठी ।

—वृन्दादेवी ।

—रत्नावली ।

—श्याममञ्जरी ।

—कलभाषिणी ।

—नीलकान्ति सखी ।

—सम्मोहिनी सखी ।

—विद्युलता सखी ।

—रत्नावली सखी ।

—चित्राङ्गी सखी ।

—सुखपाली सखी ।

—आह्लादिनी सखी ।

—मधुमञ्जल ।

—सुमुखी गोपी ।

गौरगण ।

स्वरूपनिर्याय ।

- राघव (भालिवाहक) —मालाधर (ब्रज का भृत्य) ।
- दमयन्ती (राघव की भगनी) —गुणमाला (ब्रज का दासी) ।
- राघवपरिणित (पानिहाटी निवासी) —धनिष्ठा ।
- जगदीश (नृत्यविनोदी) —चन्द्रहास (ब्रज का नट) ।
- शङ्करघोष (डम्फवादक) —सुधाकर (ब्रज में मृदङ्गवादक) ।
- वैद्यविष्णुदास —सारदा (ब्रज में गायक) ।
- बुद्धिमन्तखान —मधुव्रत (ब्रज का भृत्य) ।
- जगदीशपरिणित (यसोड़ा निवासी) —चन्द्रलतिकासखी ।
- काशीश्वरगोस्वामी —शशिरेखा ।
- माधवीदासी —कलाकेली ।
- जगदीश तथा हिरण्यक —दोनों जन यज्ञ पत्नी ।
- भागवताचार्य —श्वेतमञ्जरी ।

द्वादश गोपाल ।

- अभिरामठाकुर —श्रीदाम ।
- सुन्दरानन्दठाकुर —सुदाम ।
- धनञ्जयपरिणित —वसुदाम ।
- गौरीदासपरिणित —सुबल ।
- कमलाकरपिप्पलाइ —महाबल ।
- उद्धारणदत्त —सुवाहु ।
- महेशपरिणित —महावाहु ।
- पुरुषोत्तमदासठाकुर —स्तोककृष्ण ।
- नागर पुरुषोत्तम —दाम ।
- परमेश्वरदासठाकुर —अर्जुन ।

स्वरूपनिर्णय ।

गौरगण ।

कालाकृष्णदास
श्रीधरपरिडत
हलायुवपरिडत
रुद्रपरिडत
कुमुदानन्दपरिडत
काशीश्वरपरिडत
वनमालोग्रोभा
सन्तठाकुर
मुरारिमाँहाति
गङ्गादास
गोपालठाकुर
शिवाइ
नन्दाइ
विष्णाइठाकुर

—लवङ्ग ।
—कुसुमासव ।
—प्रबल (ब्रज में सखा) ,
—वरूथप "
—गन्धर्व "
—किङ्किणी "
—अंशुमान् "
—भद्रसेन "
—वसन्त "
—उज्ज्वल "
—कोकिल "
—विलासो "
—पुण्डरीक "
—कनविद्ध "

अष्टगोस्वामी ।

श्रीरूपगोस्वामी —रूपमञ्जरी ।
श्रीसनातनगोस्वामी —लवङ्गमञ्जरी ।
श्रीरघुनाथभट्टगोस्वामी —रसमञ्जरी ।
श्रीजीवगोस्वामी —विलासमञ्जरी ।
श्रीगोपालभट्टगोस्वामी —गुणमञ्जरी ।
श्रीरघुनाथदासगोस्वामी —रतिमञ्जरी ।
श्रीलोकनाथगोस्वामी —मञ्जुलालीमञ्जरी ।
श्रीभूगर्भगोस्वामी —प्रेममञ्जरी ।

षष्टिसिद्धिः—अनन्तपुरी, कृष्णानन्दपुरी, सुखानन्दपुरी, गोविन्द-
पुरी, रघुनाथपुरी, केशवपुरी, दामोदरपुरी, राघवपुरी ॥

कमतः—अणिमा, महिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व,
वशित्व, कामावसायित्व ॥

नवनिधिः—श्रीनिधि, श्रीगर्भ, कविरत्न, सुधानिधि, विद्यानिधि,
गुणनिधि, रत्नवाहु, प्राचार्यरत्न, रत्नाकरपरिडत ॥

कमतः—पद्म, महापद्म, शङ्ख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुम्भ,
नील, खर्व ॥

नवजयन्तपुत्रः—नृसिंहानन्दतार्थ, सत्यानन्दतीर्थ, चिदानन्दतीर्थ,
जगन्नाथतीर्थ, वासुदेवतीर्थ, श्रीरामतीर्थ, गरुडश्रवधूत, गोपेन्द्र-
आश्रम ॥

कमतः—जयन्त के नै पुत्र ॥

अष्ट प्रधान महन्तः—

गौरगण—

ब्रजपरिकरः—

| | | |
|-------------------|---|--------------|
| स्वरूपदामोदर | — | ललिता । |
| रायरामानन्द | — | विशाखा । |
| सेनशिवानन्द | — | चित्रा । |
| रामानन्दवसु | — | चम्पकलता । |
| माधवघोष | — | तुंगविद्या । |
| गोविन्दानन्दठाकुर | — | इन्दुरेखा । |
| गोविन्दघोष | — | रंगदेवी । |
| वासुदेवघोष | — | सुदेवी । |



चौषठ महन्त की भोगमाला:—

पञ्चतत्त्व:—श्रीमन्महाप्रभु, श्रीनित्यानन्दप्रभु, श्रीअद्वैतप्रभु, श्री-
गदाधरपरिणित तथा श्रीवासपरिणित ॥ (पूर्वाभिमुख में)

पञ्चतत्त्व की वाई ओर दक्षिणाभिमुख में—

गुरुवर्ग की यथा—माधवेन्द्रपुरी, ईश्वरपुरी, परमानन्दपुरी, विष्णु-
पुरी, रघुनाथपुरी, कृष्णानन्दपुरी, नृसिंहानन्दपुरी, सुखानन्दपुरी,
अनन्तपुरी, रामचन्द्रपुरी ॥

गुरुवर्ग के वामभाग दक्षिण मुख में—

भारतीगोस्वामियों की यथा—केशवभारती, ब्रह्मानन्दभारती,
बलरामभारती, रामानन्दभारती, वल्लभभारती, यदुनन्दनभारती,
श्यामानन्दभारती ॥

पञ्चतत्त्व के वाम भाग पूर्वाभिमुख में—

द्वादश गोपालों की यथा—अभिरामठाकुर, सुन्दरानन्दठाकुर, धन-
जयपरिणित, गौरीदासपरिणित, कमलाकरपिप्पलाई, उद्धारणदत्त,
महेशपरिणित, पुरुषोत्तमदास, नागरपुरुषोत्तम, परमेश्वरदास,
कालाकृष्णदास, खोलावेचा श्रीधरपरिणित ॥

भारतीगोस्वामियों की वाई ओर पूर्वाभिमुख में—

अष्टप्रधान महन्त—स्वरूपदामोदर, रायरामानन्द, सेनशिवानन्द,
रामानन्दवसु, माधवघोष, गोविन्दानन्दठाकुर, गोविन्दघोष, वासु-
देवघोष ॥

अष्टप्रधान महन्त की वाई ओर पूर्वमुख में प्रत्येक के आठ आठ
कर के कुल चौषठ—

स्वरूपदामोदरगोस्वामी के आठ पार्षद:—

चन्द्रशेखर आचार्य, रत्नगर्भठाकुर, गोविन्द, गरुड़, मुकुन्ददत्त,

दामोदरपरिणित, कृष्णदासठाकुर, कृष्णानन्दठाकुर ।

ब्रजलीला में—(क्रमतः) रत्नप्रभा, रतिकला, सुभद्रा, भद्र-
रेखिका, सुमुखी, धनिष्ठा, कलहंसी, कलापिनी ॥

इनकी वाई ओर रामानन्दराय के आठ पार्षद:—

माधवाचार्य, नीलाम्बरठाकुर, रामचन्द्रदत्त, वासुदेवदत्त, नन्दना-
चार्य, शकरठाकुर, सुदर्शनठाकुर, सुबुद्धिमिश्र ॥

ब्रजलीला में—(क्रमतः) माधवी, मालती, चन्द्ररेखिका, कुञ्जरी,
हरिणी, चपला, सुरभी, शुभानना ॥

इनकी वाई ओर शिवानन्दसेन के आठ पार्षद:—

श्रीरामपरिणित, जगन्नाथदास, जगदीशपरिणित, मदाशिवकवि-
राज, रायमुकुन्द, मुकुन्दानन्द, पुरन्दराचार्य, नारायण-
वाचस्पति ॥

ब्रजलीला में—(क्रमतः) रसालिका, तिलकिनी, शौरसेनी,
सुगन्धिका, कामिला, कामनागरी, नागरी, नागवेलिका ॥

इनकी वाई ओर वसुरामानन्द के आठ पार्षद:—

मधुपरिणित, मकरध्वजकर, द्विजरघुनाथ, विष्णुदास, पुरन्दर-
मिश्र, गोविन्दाचार्य, परमानन्दगुप्त, बलरामदास ॥

ब्रजलीला में—(क्रमतः) कुरंगाक्षी, सुचरिता, मण्डली, मणि-
कुण्डला, चन्द्रिका, चन्द्रलतिका, कन्दुकाक्षी, सुमन्दिरा ॥

इन की वाई ओर गोविन्दघोष के आठ पार्षद:—

काशीमिश्र, शिखिमाहाति, कालिदास, श्रीमान् परिणित, कवि-
चन्द्रठाकुर, हिरण्यगर्भ, जगन्नाथसेन, द्विजपोताम्बर ॥

ब्रजलीला में ये (क्रमतः)—कलकंठी, शशिकला, कमला, मधु-
रेन्दिरा, कन्दर्पसुन्दरी, कामलतिका, प्रेममञ्जरी ॥

इनकी वाई ओर वासुदेवघोष के आठ पार्षद:—

राघवपरिणित, रुद्रपरिणित, मकरध्वजपरिणित, कंसारिसेन,

जीवपरिणत, मुकुन्दकविराज, छोटे हरिदास तथा कविचन्द्र-
आचार्य ॥

ब्रजलीला में ये (क्रमतः) कावेरी, चारुकरा, सुवेशो, मंजु-
केशिका, हारहीरा, महाहीरा, हारकंठो, मनोहरा ॥

इन की बाईं ओर माधवघोष के आठ पार्श्वद—

मकरध्वजसेन, विद्यावाचस्पति, गोविन्दठाकुर, कविकर्णपुर,
श्रीकान्ताकुर, माधवपरिणत, प्रबोधानन्दसरस्वती तथा बल-
भद्रभट्टाचार्य ॥

ब्रजलीला में क्रमतः ये—

मंजुमेधा, सुधुरा, सुमध्या, मधुरेक्षणा, तनुमध्या, मधुस्यन्हा,
गुणचूड़ा तथा वराङ्गदा ॥

इन की बाईं ओर गोविन्दानन्दघोष के आठ पार्श्वदः—

परमानन्दगुप्त, वल्लभठाकुर, जगदाशठाकुर, वनमालीदास,
श्रीनिधिपरिणत, श्रीकरपरिणत, लक्षणाचार्य तथा पुरुषोत्तम-
परिणत ॥

ब्रजलीला में क्रमतः ये—तुङ्गविद्या, रसतुङ्गा, रंगवाटी, सुम-
ङ्गला, चित्ररेखा, विचित्रांगी, मोदनी तथा मदनालसा ॥

द्वादश गोपाल की बाईं ओर पूर्वाभिमुख में अष्ट गोस्वामी
की भोग—

श्रीरूप, सनातन, रघुनाथभट्ट, रघुनाथदास, गोपालभट्ट, श्री-
जीव, लोकनाथ तथा भूगर्भगोस्वामी ॥

ब्रजलीला में क्रमतः यथा—

रूपमञ्जरी, लवंगमञ्जरी, रसमञ्जरी, रतिमञ्जरी, गुणमञ्जरी,
विलासमञ्जरी, मंजुलालीमञ्जरी (नामान्तर लीलामञ्जरी)
तथा प्रेममञ्जरी ॥

इन के बाद छे चक्रवर्ती, तथा अष्ट कविराज की भोग—

चक्रवर्तीगण प्रभु के सम्मुख पश्चिमाभिमुख में तथा कविराज-
गण चक्रवर्तिगण के वामभाग में पश्चिमाभिमुख में बैठेंगे ॥

छे चक्रवर्ती—

श्रीवास, गोकुलानन्द, श्यामदास, श्रीदास, गोविन्द तथा
रामचरणचक्रवर्ती ॥

अष्ट कविराजः—

रामचन्द्र, गोविन्द, कर्णपुर, नृसिंह, भगवान्, वल्लभदास,
गोकुल तथा गोपीरमणकविराज ॥

छे चक्रवर्ती तथा अष्ट कविराज ये सब श्रीनिवासाचार्यप्रभु
के शिष्य हैं ।

पञ्चतत्त्व के दक्षिण-उत्तरमुख में पितृवर्ग की भोगमाला—

पितृवर्ग यथा—कुवेराचार्य, जगन्नाथमिश्र, तथा हाड़ाइ-
परिणत ॥

पञ्चतत्त्व की बाईं ओर दक्षिणमुख में मातृवर्ग की भोग—

मातृवर्ग यथा—नाभादेवी, शचीमाता तथा पद्मावती ॥

मातृवर्ग की बाईं ओर दक्षिणमुख में प्रियावर्ग का पङ्क्त—

प्रियावर्ग यथा—सीताठाकुरानी, श्रीठाकुरानी, विष्णुप्रिया,
लक्ष्मीप्रिया, वसुधादेवी तथा जाम्हवाठाकुरानी ॥

छे चक्रवर्ती के दक्षिण-पश्चिममुख में सन्तानगण का पङ्क्त—

सन्तानगण यथा—वीरचन्द्रगोस्वामी, रामाई, नन्दाई, मीन-
केतन, रामदास, अच्युतानन्द, कृष्णमिश्र, बलराममिश्र,
गोपालदास, जगदीश, नन्दिनी, जङ्गली, नरहरिसरकारठाकुर,
मुकुन्द, रघुनन्दन, चिरञ्जीव तथा सुलोचन ॥

चौसठ महन्त के बाईस ओर पूर्वमुख में ठाकुरगण का पंगत-
ठाकुरगण यथा-नरोत्तम, श्रानिवासाचाय प्रभु तथा क्षी श्यामाकन्द
ठाकुर' ॥

निवेदक अपने सम्प्रदाय के महाजनों के सिद्धान्तानुसार गुरु-
वग एव गुरुस्थानीय पाषदगण को कृष्णनिबोधित वस्तु द्वारा तथा
अवशिष्ट पार्वदों को पंचतत्त्वनिबोधित वस्तु द्वारा भोग धरावें ॥

इति भोगमाला-समाप्त



॥ श्री गौराङ्गविधुर्जयति ॥

❀ श्री कृष्णचैतन्यदेवो जयति ❀

-॥ प्रणामविधायकस्त्रोतम् ॥-



श्री मदगुरुन्प्रपद्येऽहं वाञ्छाकल्पतरुन्प्रभून् ।

येषां कृपाञ्जनेनापि नेत्रं याति प्रकाशिताम् ॥ १ ॥

श्री कृष्णचैतन्य कृपाम्बुराशे,

संसारसिन्धौ पतिते मयि त्वम् ॥

कामादि-नक्र-प्रसितेऽतिदाने,

द्रागद्दीनबन्धो करुणां बिधेहि ॥ २ ॥

श्रीश्रीमत्कृष्णचैतन्यं बन्देऽहं करुणार्णवम् ।

जीवेभ्यः कृपया गुप्तां प्रेम-भक्तिं ददाति यः ॥ ३ ॥

यस्य प्रेम - प्रभावैरतिशयकरुणः श्रीलगोपालदेवः

प्राकट्यं प्राप्य लोकान्मदयति सततं भक्तवात्सल्यमूर्तिः ।

गोपीनाथश्च यस्य प्रणयवशमगात् क्षीरचोराभिधानः

तं श्रीमन्माधवेन्द्रं निरवधि शिरसा नौमि सानन्दाचिताम् ॥ ४ ॥

कृपारसनिधिं बन्दे श्रीनित्यानन्दमीश्वरम् ।

यत्कारुण्यकणेनापि विश्वं याति कृतार्थताम् ॥ ५ ॥

श्रीनित्यानन्दचन्द्रः पतितततिगतिः पूर्णकारुण्ययुक्तः

श्रीमच्चैतन्यचन्द्रप्रियतमसुखदो जीव - निस्तारकारी ।

यत्कारुण्यप्रभाबाद्बुवनजनगणो भक्तिमासाद्य गूढां
 गायत्युच्चैः प्रमत्ताः स तु मम शरणं दुर्गतेः जीवनञ्च ॥६॥
 श्रीकृष्णचैतन्यगणाग्रगण्यं, भक्तिप्रवर्त्ताय कृतावतारम् ।
 दीनैकबन्धुं महितं जगत्यामद्वैतचन्द्रं शिरसा नमामि ॥७॥
 श्रीमदद्वैतचन्द्रं तं बन्देऽहं जगतां गुरुम् ।
 येनाराधनहुंकारैश्चैतन्यः प्रकटीकृतः ॥ ८ ॥
 तं बन्दे सततं भक्त्या परिण्डितं श्रीलगदाधरम् ।
 यस्य केवलजीबाहुः श्रीचैतन्यमहाप्रभुः ॥ ९ ॥
 श्रीचैतन्यप्रियतमं बन्दे श्रीबासपरिण्डितम् ।
 यत्कारुण्यकटाक्षेण श्रीगौराङ्गे रतिर्भवेत् ॥ १० ॥
 बन्दे श्रीहरिदासं तं श्रीमच्चैतन्यजीवनम् ।
 श्री कृष्ण नाम-महिमा-लोके येन प्रकाशितः ॥ ११ ॥
 दामोदरमहं बन्दे गौराङ्गाप्रियपार्षदम् ।
 येन श्रीकृष्णचैतन्यवाक्यदण्डेन तोषितः ॥ १२ ॥
 परिण्डितं जगदानन्दं बन्दे प्रेमपरिप्लुतम् ।
 यः स्नेहेन वशीकृत्य गौरमन्नमभोजयत् ॥ १३ ॥
 श्री मद् बक्रेश्वरं बन्दे परिण्डितं करुणामयम् ।
 श्रीचैतन्यप्रियतमं नृत्योत्सवमहाद्भुतम् ॥ १४ ॥
 श्रीमद्विष्णुपुरीं बन्दे श्रीमद्भागवताम्बुधेः ।
 श्रीविष्णुभक्तिरत्नानां माला येन प्रकाशिता ॥ १५ ॥
 श्री श्रीश्वरपुरीं बन्दे सदा प्रेम-परिप्लुतम् ।
 बन्दे श्रीपरमानन्दपुरीं गम्भीरमानसम् ॥ १६ ॥
 सार्वभौममहं बन्दे भट्टाचार्यमहाशयम् ।
 श्रीचैतन्यकृपापात्रं सर्वशास्त्रार्थपारगम् ॥ १७ ॥
 श्री मत्काशीश्वरं बन्दे श्रीगोविन्दमहामतिम् ।
 यत्प्रेम-सेवया नित्यं श्रीगौराङ्गसुखं व्रजेत् ॥ १८ ॥

श्रीमत्स्वरूपस्य पदाब्जधूलिं बन्दामहे नित्यमतिप्रयत्नैः ।
 देहो द्वितीयश्च महाप्रभो र्योऽप्यत्यन्तगम्भीरमतिर्दयाब्धिः ॥१९॥
 यः श्रीयुतस्वरूपः सकलगुणखनिस्तप्तहेमाङ्गकान्तिः
 श्रीमच्चैतन्यचन्द्रप्रियतमपरमः प्रेमपूर्णप्रतीकः ।
 श्रीराधाकृष्णलीलारतिरसरचनागानशास्त्रार्थविज्ञो
 वन्दे तस्याङ्घ्रिं पद्मं मधुरमधुरं मञ्जुलामोदचित्तम् ॥२०॥
 यो रामानन्दरायो गुणनिधिरसिकः कृष्णचैतन्यभक्तः
 श्री राधाकृष्णलीलामृतमधुररसप्रेममाध्वीकमत्ताः ।
 गम्भीरश्चातिधीरो गुणगणचतुरो लोकरम्यस्वभावो
 बन्दे तत्पादपद्मं निरबधि सुखदं नित्यमानन्दरूपम् ॥२१॥
 श्री विद्यानिधिनामकं निरुपमं बन्दे प्रपन्नो मुदा
 सर्वानन्दकदम्बनन्दतनुजे प्रेम - प्रमत्ताकृतिम् ।
 श्रीचैतन्यमहाप्रभोः प्रियतमं गाम्भीर्यवन्तं सदा
 यस्य स्नेहरसो भवन् गुणनिधी रौतिस्म गौरोहरिः ॥ २२ ॥
 श्रीलाभिरामो जगति प्रसिद्धो,
 यः सख्यभावामृतसिन्धुमग्नः ।

प्रेम प्रमत्तो विदिताद्भुतेहा

तस्याङ्घ्रिं युग्मं सततं नमामि ॥ २३ ॥
 परिण्डितं जगदीशं तं वन्दे नित्यविनोदिनम् ।
 यदाश्रयेन लोकानां चैतन्ये जायते रतिः ॥ २४ ॥
 मुरारिं वासुदेवञ्च श्रीधरं विजयं तथा ।
 श्री चैतन्यप्रियान् बन्दे श्रीनवद्वीपवासिनः ॥ २५ ॥
 श्री मुकन्दं सदा बन्दे श्रीमन्नरहरिं तथा ।
 श्री रघुनन्दनं बन्दे सर्वान् श्रीखण्डवासिनः ॥ २६ ॥
 नारायणीसुतं बन्दे दासवृन्दाबनाभिधम् ।
 चैतन्यचन्द्रचरितै र्येनैवोद्धारितं जगत् ॥ २७ ॥

रामानन्दस्वरूपञ्च श्रीवासं हरिदासकम् ।

श्री चैतन्यप्रियतमान्सर्वान् बन्दे कृताञ्जलिः ॥ २८ ॥

श्री कृष्णचैतन्यपदारविद-

माध्वीकपानेन सदैव मत्ताम् ।

बन्दामहे श्रीयुतकर्णपूरं

प्रीत्या वयं नित्यमतिविनम्राः ॥ २९ ॥

चैतन्यपादाब्जमरन्दलुब्धो,

गांधर्विकाकृष्णगुणैः प्रमत्ताः ।

श्रीमूर्तितीर्थादिप्रचारकर्ता,

बन्धः सदा श्रीलसनातनो मे ॥ ३० ॥

यत्पादपङ्कजरजः शिरसा प्रणम्य

धन्या भवन्ति नितरां बहवो जगत्याम् ।

श्रीमत्सनातनतनुः सदयार्द्रचित्तो

मन्दस्य मेऽप्यनुदिनं शरणं स एव ॥ ३१ ॥

सनातनं प्रभुं वन्दे दीनदुःखेन दुःखितम् ।

यत्कपालेशमात्रेण पामरोऽप्युत्तमो भवेत् ॥ ३२ ॥

श्रीरूपपादरेणुर्मे केवलं जीवनौषधम् ।

निपत्य भूमौ तं वन्दे यतः पूर्णमनोरथः ॥ ३३ ॥

श्रीमद्रूपपादाम्भोजधूलि बन्दे निरन्तरम् ।

दशनैस्तृणमादाय भूयो भूयः कृताञ्जलिः ॥ ३४ ॥

श्रीरूपस्य पदारविदयुगलं मूर्ध्ना निपत्य क्षितौ

बन्दे नित्यमहं शरण्यमतुलं सर्वाभिलाषप्रदम् ।

श्रीचैतन्यकृपासुधाजलनिधौ मग्नस्य येनेह वै

राधाकृष्णनिगूढभक्तिविततिः प्रेम्णा प्रकाशीकृतः ॥ ३५ ॥

श्री रूपस्यार्ङ्ग्यं पद्मं प्रणतगतिमहं नौमि भूमौ निपत्य

श्री राधाकृष्णलीलामृतसलिलनिधौ मज्जितो येन लोकः ।

श्रीमच्चैतन्यचन्द्रोऽतिशयकृपया यत्र शक्तिं प्रकाशय

श्रीमद्बृन्दावनीयं मधुररतिरसं दर्शयामास सर्वान् ॥ ३६ ॥

संसारकूपपतिते मयि दुष्टबुद्धौ,

कामादिसक्तहृदये करुणार्द्रचित्ताः ।

दुर्वासनाहिगिलिते शरणं त्वमेव,

श्रीरूप दुर्गतजने करुणां विधेहि ॥ ३७ ॥

श्रीचैतन्यकृपासुधाब्धिलहरीसिक्तं गम्भीरं गुणैः

श्रीरूपप्रणयप्रमोदसरसीभङ्गादितस्वान्तकम् ।

श्रीबृन्दाबिपिनेश्वरीगिरिभृतो लीलामृतास्वादकं

तं श्रीमद्रघुनाथभट्टमनिशं वन्दे प्रमोदान्वितम् ॥ ३८ ॥

तं भट्टरघुनाथाख्यं वन्दे भागवतीयकम् ।

श्रीचैतन्यप्रियतमं शरणागतपालकम् ॥ ३९ ॥

श्रीकृष्णचैतन्यकृपाभिसिक्तं, श्रीरूपमख्यामृतपूर्णचित्ताम् ।

श्रीराधिकाकृष्णसुखाब्धिमग्नं, गोपालभट्टं प्रभुमाश्रयामि ॥ ४० ॥

श्रीमद् गोपालभट्टप्रभुवरकरुणासागरो दीनबन्धो

स्तस्य श्रीपाद पद्मं नतजनशरणं सर्वदाहं नमामि ।

श्रीमच्चैतन्यदेवः परमसदयधीः सान्द्रकारुण्ययुक्तः

श्रीराधाकृष्णपादाम्बुजपरिचरणं, शिक्षयामास यस्मै ॥ ४१ ॥

श्रीदासरघुनाथाख्यं वन्दे दीनैकबान्धवम् ।

बासो नियमितो येन राधाकुण्डतटे सदा ॥ ४२ ॥

श्रीकृष्णचैतन्यकृपैकपात्रं श्रीराधिकाकृष्णपदाब्जभृङ्गम् ।

तेषाञ्च प्रेमामृतसिन्धुमग्नं, वन्दे सदा श्रीरघुनाथदासम् ॥ ४३ ॥

श्रीचैतन्यकृपासुधामयनदीबीचीभिरासिञ्चितः

श्रीमद्रूपसनातनप्रियतमश्रीजीबवात्सल्यवान् ।

श्रीराधासरसीतटे विनिवसन् नामामृतानन्दितो

यस्तं श्रीरघुनाथदासमनिशं वन्दे कृपासागरम् ॥ ४४ ॥

बन्दे श्रीलोकनाथं तं श्रीमच्चैतन्यबलभम् ।
 दयालुं करुणापूर्णं दीनानुग्रहकातरम् ॥ ४५ ॥
 यः श्रीमान्लोकनाथः सकलगुणनिधिः भावगम्भीरचित्ताः
 श्रीमच्चैतन्यचन्द्रे विमलविनयधीर्नाममाध्वाकभृङ्गः ।
 श्रीमद् वृन्दाबनेशा-व्रजपतितनय-प्रेमपीयूषमत्तो
 बन्दे तस्याङ्घ्रिपद्मं सततमनुपमं मोदरोमाश्रिताङ्गः ॥ ४६ ॥
 दर्शितार्थो जनेभ्यश्च श्रीमद्भागवतस्य यः ।
 तं नमामि सदैव श्रीजीवगोस्वामिनं प्रभुम् ॥ ४७ ॥
 श्रीमज्जीवः सदयहृदयो लोकदुर्गम्यभावो
 भक्तेस्तत्त्वं परममतुलं सर्वशास्त्रे निगूढम् ।
 कृष्णस्यापि प्रचुरचरितं यश्चकार प्रकाशं
 तस्य श्रीमच्चरणयुगलं नौमि नित्यं प्रपन्नाः ॥ ४८ ॥
 श्रीजीवस्य पदारविन्दमतुलं बन्दामहे सर्वदा
 वाञ्छाकल्पतरोः कृपाद्रिं मनसो दीनैकबन्धो प्रभोः ।
 श्रीमद्वरुणसनातनाङ्घ्रिं कमले भृङ्गायमानात्मनो
 येन श्रीभगवन्महत्त्वविततेः सिद्धान्त आबिष्कृतः ॥ ४९ ॥
 यः श्रीमत्कृष्णदासः कविनृपतिवरः स्निग्धमुग्धस्वरूपः
 श्रीमच्चैतन्यचन्द्रस्य चरितरचना भूरिकीर्तिर्जगत्याम् ।
 श्रीमद् वृन्दाबने श्रीवृषरवितनयाकृष्णभावविमग्नो
 बन्दे तत्पादयुगलं सकलकुशलदं नित्यमानन्दयुक्तम् ॥ ५० ॥
 बन्दे श्रीकृष्णदासारूप्यं कविराजं गुणालयम् ।
 मज्जितं भुवनं येन कृष्णलीलामृताण्वे ॥ ५१ ॥
 आचार्य श्रीनिवासारूप्यं प्रभुं बन्दे कृपामयम् ।
 यत्पादकमलद्वन्द्वं गतिर्मे जन्म-जन्मनि ॥ ५२ ॥
 आचार्य श्रीनिवासप्रभुरतिरुचिरस्तप्तकार्त्तस्वराभः
 श्रीराधाकृष्णनामामृतमयजलधेरुर्मिनाकृष्टजिह्वः ।

यः श्रीवृन्दावनीयं मधुररतिरसं दर्शयामास लोकान्
 तस्य श्रीमत्पादाब्जं मम कृपणमतेः जीवनं तच्च नौमि ॥ ५३ ॥
 यस्य श्रीमच्चरणकमलद्वन्द्वमाश्रित्य मदं-
 प्रीत्या वाञ्छास्म्यविरतमहं कृष्णपादाब्जभक्तिम् ।
 आचार्यः स स्फुरतु हृदये श्रीनिवासप्रभुर्मे
 लोकान्सर्वान् य इह सदयो भक्तियुक्तांश्चकार ॥ ५४ ॥
 बन्दे नरोत्तमं नाम श्रीठक्कुरमहाशयम् ।
 चन्द्रिकां प्रेमभक्तिं यश्चकार परमोज्ज्वलाम् ॥ ५५ ॥
 कविराजं रामचन्द्रं तथा गोविन्ददासकम् ।
 श्रीनृसिंहं घनश्यामं बन्दे सर्वान्महामतीन् ॥ ५६ ॥
 श्यामानन्दमहं बन्दे प्रेमानन्दपरिप्लुतम् ।
 यस्मै श्रीराधिका स्वीयां तुलाकोटिं ददौ मुदा ॥ ५७ ॥
 बन्दे श्रीरसिकानन्दं दीनानुग्रहकातरम् ।
 पश्वादिभ्योऽपि नामानि कृपयोपदिदेश यः ॥ ५८ ॥
 सर्वाभिष्टप्रदान्बन्दे वैष्णवान्दीनबत्सलान् ।
 येषां कृपालवेनापि सर्वविघ्नो विनश्यति ॥ ५९ ॥
 सर्वेषां भक्तवृन्दानां गौरप्रेमवतां सताम् ।
 नित्यं पादरजो बन्दे मन्दधीरात्मशुद्धये ॥ ६० ॥
 अज्ञोऽधमोऽपराधीश्च दुष्टो दोषाकरोऽस्यहम् ।
 क्षम्यतां सर्व-मन्तुर्मे सर्वत्र कृपयान्विताः ॥ ६१ ॥
 यः श्रद्धया पठेदेतान् श्लोकान्नतिविधायकान् ।
 तस्मिन् श्रीकृष्णचैतन्यः सर्वथैव प्रसीदति ॥ ६२ ॥
 ॥ इति प्रणामविधायारव्यं स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ केनचित् प्रकटीकृतम् ॥



जय जय जय जग-मङ्गलकारी

जन मनमोहन गौर कृष्ण विधु नदिया पूर वर वरज बिहारि ॥ध्रु०
 नित्यानन्दचन्द्र हलधर हर कलिकलुष विषम अन्धियारि ।
 श्रीअद्वैत परमकरुणा निधि दारुण भव दब दहने उधारि ॥
 सुखद गदाधर धरनिबिदीत सिरिबासहि प्रेमभक्ति अधिकारि ।
 गरुड गदाधर नरहरि हरिदास स्वरूप प्रिय गुपत - मुरारि ॥
 सार्वभौम सिरि - वासुदेव विद्यानिधि पुण्डरीक सुखकारी ।
 सिरि जगदीश विजय बक्रेश्वर दामोदर वर विपद बिदारि ॥
 रामानन्द मुकुन्द सुन्दरानन्द नयनानन्द प्रचारि ।
 श्रीनिधि प्रबोधानन्द गौरसे गरगर हृदय न रहत सम्भारि ॥
 रामानन्दराय रससागर परमानन्द गुपत धृति धारि ।
 राघव रघुपति राम महिबर करन प्रेमधन मुदित विकारि ॥
 काशीश्वर परमेश्वर नारयण सुदर्शन नयन फल चारि ।
 रूप सनातन रघुनाथ श्रीजीव भक्ति - वर रतून उधारि ॥
 श्रीगोपालभट्ट रघुनाथ ही लोकनाथ चैतन्य - मुरारि ।
 बासुधोष माधव गोविन्द सप्रेम जलाधि मधि सतत साँतारि ॥
 श्रीधर परमानन्द पुरन्दर पहु गुणे निरत नयने भरु वारि ।
 सिरि उद्धारण धनञ्जय रुञ्जय गौरिदास यश बिसद बिथारि ॥
 संकर रघुनन्दन महेश अभिराम शमन-भय भञ्जन कारि ॥
 श्रीयदु मधु - परिणत शुक्लाम्बर वृन्दावन वरषत रस भारि ॥
 जगदानन्द मुकुन्द गानरत पहरस वस निशि दिवस बिसारि ।
 कर्णपूर कविलोचन जनलोचन गुणगण गायत नर नारि ॥
 सिरि श्रीनिवास नरोत्तम श्यामानन्द सगण गनइ ना पारि ।
 नरहरि भण मन आस पुरह निज दास करह अति दुखित नेहारि ॥
 —गोरकृष्णभावनामृते



सूचना

यह साधककण्ठभूषण विशालरूपसे प्रस्तुत-करके साधकों
 के समक्षमें उपस्थित करने का विचार है । इसमें प्रचुर धन-
 शिष्टी आवश्यकता है । कुछ दिनसे स्वास्थ्य खराब होनेसे
 या अनेक प्रकार की अशान्तिके कारण यह कार्य तथा प्राचीन
 गोस्वामी साहित्यप्रकाशन कार्यमें काफी बाधा आई है ।
 प्रागे प्रभु की जैसी इच्छा होगी वैसा होगा ।

बाबाकृष्णदास

अन्तिम चार पृष्ठ व मुखपृष्ठ गोरहरि प्रेस वृन्दावन में छपा,
 शेष कुसुमसरोवरमें छपा ।